11 सूरए हूद

आयतों का न्याय दर्शन से विश्लेषण

आयत 1

आयत का अनुवाद:
"अलिफ़ लाम रा - ये (क़ुरान) वह किताब है जिसकी आयतें एक वाकिफ़कार हकीम की तरफ से (दलाएल से) खूब मुस्तहकिम (मज़बूत) कर दी गयीं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत क़ुरान को एक प्रमाणिक और मजबूत किताब मानने का दावा करती है।
- **हेतु (Reasoning):**
  आयत के अनुसार, क़ुरान की आयतें एक विशेषज्ञ के ज्ञान से प्रमाणित हैं। हालांकि, यह दावा बिना किसी वास्तविक प्रमाण के किया गया है।
- **उदाहरण (Example):**
  धार्मिक ग्रंथों में कई बार दावा किया गया है कि वे ईश्वर द्वारा भेजे गए हैं, लेकिन क्या इन दावों को केवल विश्वास के आधार पर सत्य माना जा सकता है?
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन में प्रमाण का सिद्धांत यह कहता है कि ज्ञान तभी सत्य होता है जब वह प्रत्यक्ष या प्रमाणित हो। क़ुरान के ज्ञान का वैज्ञानिक या अनुभवजन्य प्रमाण नहीं दिया गया है। यही कारण है कि इस आयत का दावा तर्कसंगत रूप से गलत है।

- **निगमन (Conclusion):**
  कुरान को प्रमाणिक और मजबूत किताब मानने के लिए वास्तविक और प्रमाणिक स्रोतों से सिद्ध करना आवश्यक है। इसे केवल धार्मिक विश्वासों के आधार पर नहीं माना जा सकता।

आयत 2

आयत का अनुवाद:
"फिर तफ़सीलदार बयान कर दी गयी हैं ये कि ख़ुदा के सिवा किसी की परसतिश न करो, मैं तो उसकी तरफ से तुम्हें (अज़ाब से) डराने वाला और (बहिश्त) खुशख़बरी देने वाला (रसूल) हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि केवल ख़ुदा की पूजा करनी चाहिए और पैगंबर केवल ख़ुदा के संदेशवाहक हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क किया जाता है कि केवल ख़ुदा की पूजा से ही मुक्ति मिलेगी और पैगंबर को बस एक सूचना देने वाला माना जाना चाहिए। हालांकि, इस तर्क में कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं दिया गया है।

- **उदाहरण (Example):**
  हिंदू धर्म में कई देवताओं की पूजा की जाती है, और बौद्ध धर्म में आत्मनिर्भरता की शिक्षा दी जाती है। क्या ये अन्य धार्मिक विश्वास इस आयत के दावे को गलत नहीं ठहराते?

- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, यह तर्क हेतु (Reason) का दोषी है। किसी विशेष ईश्वर की पूजा को सही ठहराने के लिए एक सार्वभौमिक तर्क नहीं दिया गया है। यह केवल विश्वास और सांस्कृतिक विचारों पर आधारित है, जो हर व्यक्ति पर लागू नहीं हो सकता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल एक विशेष धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो हर व्यक्ति के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता। यह तर्क केवल एक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से सही हो सकता है, लेकिन इसे सार्वभौमिक रूप से मान्य नहीं ठहराया जा सकता।

आयत 3

आयत का अनुवाद:
"और ये भी कि अपने परवरदिगार से मग़फिरत की दुआ माँगों फिर उसकी बारगाह में (गुनाहों से) तौबा करो वही तुम्हें एक मुकर्रर मुद्दत तक अच्छे नुत्फ़ के फायदे उठाने देगा और वही हर साहबे बुज़ुर्ग को उसकी बुज़ुर्गी (की दाद) अता फरमाएगा और अगर तुमने (उसके हुक्म से) मुँह मोड़ा तो मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े (ख़ौफनाक) दिन के अज़ाब का डर है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि तौबा करने से व्यक्ति को लाभ मिलेगा और न मानने पर दंड मिलेगा।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क किया गया है कि तौबा से फायदा होता है और न मानने पर दंड मिलेगा, लेकिन यह तर्क बिना अनुभव और प्रमाण के आधारित है।

- **उदाहरण (Example):**
  समाज में तात्कालिक दंड और पुरस्कार के सिद्धांत प्रचलित हैं, लेकिन क्या इसका न्यायिक आधार तर्कसंगत है? उदाहरण स्वरूप, एक व्यक्ति को शारीरिक कष्ट देने से उसके मानसिक दोषों का समाधान नहीं होता।

- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, प्रमेय (Object of Knowledge) का विश्लेषण किया जाता है। क्या यह दावा हर व्यक्ति के लिए उचित है? क्या किसी विशेष धर्म के अनुयायी के लिए यह अवधारणा सभी पर

लागू हो सकती है?

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में तर्क का कमी है, क्योंकि यह केवल विश्वास पर आधारित है। इसे तर्कसंगत सिद्धांत से समझाने की आवश्यकता है।

आयत 4

आयत का अनुवाद:
"तुम सब को (आख़िरकार) ख़ुदा ही की तरफ लौटना है और वह हर चीज़ पर (अच्छी तरह) क़ादिर है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्यापति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि सभी को एक दिन ख़ुदा के पास लौटना है, और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क किया गया है कि एक दिन हर व्यक्ति को ख़ुदा के पास लौटना है, लेकिन यह तर्क केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई प्रमाण नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  कई लोग मृत्यु के बाद आत्मा की यात्रा पर विश्वास करते हैं, जबकि कुछ लोग इसे केवल एक प्राकृतिक घटना मानते हैं। क्या दोनों के विश्वासों को एक समान माना जा सकता है?

- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, व्यापति का सिद्धांत यह कहता है कि कोई घटना तभी सच मानी जाती है जब वह हर स्थिति में लागू होती है। क्या मृत्यु के बाद सभी के लिए ख़ुदा के पास लौटना एक सार्वभौमिक सत्य है?

- **निगमन (Conclusion):**
  यह दावा हर किसी के लिए लागू नहीं हो सकता, क्योंकि विभिन्न धर्मों और विश्वास प्रणालियों में मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में अलग-अलग विचार हैं। इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं माना जा

सकता।

आयत 5

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) देखो ये कुफ़्फार (तुम्हारी अदावत में) अपने सीनों को (गोया) दोहरा किए डालते हैं ताकि ख़ुदा से (अपनी बातों को) छिपाए रहें (मगर) देखो जब ये लोग अपने कपड़े ख़ूब लपेटते हैं (तब भी तो) ख़ुदा (उनकी बातों को) जानता है जो छिपाकर करते हैं और खुल्लम खुल्ला करते हैं इसमें शक नहीं कि वह सीनों के भेद तक को खूब जानता है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि लोग अपनी छिपी हुई बातों को नहीं छिपा सकते, क्योंकि ख़ुदा उन्हें जानता है।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क किया जाता है कि ख़ुदा सर्वज्ञ है और कोई भी बात छिपी नहीं रह सकती। यह एक विश्वास आधारित तर्क है, जिसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example):**
  क्या यह दावा किसी अन्य ज्ञान या तर्क से सिद्ध किया जा सकता है? क्या सर्वज्ञता का सिद्धांत तर्कसंगत रूप से सिद्ध हो सकता है?
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, प्रमाण का सिद्धांत यह कहता है कि कोई भी ज्ञान तभी सत्य होता है जब वह प्रमाणित हो। क्या ख़ुदा के सर्वज्ञ होने का दावा बिना प्रमाण के स्वीकार किया जा सकता है?
- **निगमन (Conclusion):**
  यह दावा केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसे तर्कसंगत रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। इसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता

।

निष्कर्ष

प्रत्येक आयत में तर्कों का अभाव पाया गया है जो इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य सिद्ध करने के लिए आवश्यक है। प्रत्येक आयत में प्रमाण, हेतु, और व्यापति के तत्वों के आधार पर आलोचना की गई है, जिससे यह सिद्ध होता है कि ये आयतें केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण के लिए मान्य हो सकती हैं, जबकि वे पूरी मानवता के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हैं।

न्याय दर्शन के तत्वों का उपयोग करके आयतों का विश्लेषण

आयत 6

आयत का अनुवाद:
"ज़मीन पर चलने वालों में कोई ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी ख़ुदा के ज़िम्मे न हो और ख़ुदा उनके ठिकाने और (मरने के बाद) उनके सौंपे जाने की जगह (क़ब्र) को भी जानता है। सब कुछ रौशन किताब (लौहे महफ़ूज़) में मौजूद है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि हर जीव की रोज़ी का ज़िम्मा ख़ुदा ने लिया है और उसका ठिकाना और भविष्य ज्ञात है।

- **हेतु (Reasoning):**
  दावा किया गया है कि सभी जीवों का पालन-पोषण ईश्वर करता है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या अनुभवजन्य सत्य नहीं दिया गया।

- **उदाहरण (Example):**
  यदि सभी जीवों की रोज़ी का जिम्मा ईश्वर के पास है, तो भूखमरी, गरीबी और असमानता क्यों

मौजूद है? क्या यह दावा व्यावहारिक रूप से सत्य है?

- **विपरीत (Counter-Argument):**
 न्याय दर्शन के अनुसार, किसी दावे को प्रमाणित करने के लिए अनुभवजन्य सत्य आवश्यक है। इस आयत में भूख और गरीबी के उदाहरणों को नज़रअंदाज किया गया है, जिससे दावा गलत साबित होता है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसे सार्वभौमिक सत्य मानने के लिए प्रमाण की आवश्यकता है।

आयत 7

आयत का अनुवाद:
"वह तो वही (क़ादिरे मुतलक़) है जिसने आसमानों और ज़मीन को 6 दिन में पैदा किया और (उस वक़्त) उसका अर्श (फलक नहुम) पानी पर था। उसने (आसमान व ज़मीन) इस ग़रज़ से बनाया ताकि तुम लोगों को आज़माए कि तुम में ज़्यादा अच्छी कार गुज़ारी वाला कौन है।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि ईश्वर ने 6 दिन में आसमान और ज़मीन बनाई और इसे मनुष्यों की परीक्षा के लिए बनाया गया।

- **हेतु (Reasoning):**
 इस तर्क में कोई वैज्ञानिक या तार्किक आधार नहीं है। यह दावा केवल विश्वास पर आधारित है।

- **उदाहरण (Example):**
 आधुनिक विज्ञान के अनुसार, ब्रह्मांड का निर्माण करोड़ों वर्षों में हुआ है। यह आयत विज्ञान से मेल नहीं खाती और अतार्किक प्रतीत होती है।

- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, तर्क तभी सत्य होता है जब वह प्रेक्षण और तर्कशीलता के आधार पर सही साबित हो। यह आयत उन मानकों पर खरी नहीं उतरती।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह दावा विज्ञान और तर्कशीलता के विपरीत है, इसलिए इसे सार्वभौमिक सत्य नहीं माना जा सकता।

आयत 8

आयत का अनुवाद:
"अगर हम गिनती के चन्द रोज़ो तक उन पर अज़ाब करने में देर भी करें तो ये लोग ज़रुर कहने लगेगें कि (हाए) अज़ाब को कौन सी चीज़ रोक रही है। सुन रखो जिस दिन इन पर अज़ाब आ पड़े तो (फिर) उनके टाले न टलेगा।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि ईश्वर का दंड निश्चित है और उसे टाला नहीं जा सकता।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क दिया गया है कि ईश्वर का दंड अपरिहार्य है, लेकिन इसका कोई सार्वभौमिक या ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  कई सभ्यताएं और धर्म ऐसे दावों को नकारते हैं और दंड को केवल नैतिक कर्तव्यों से जोड़ते हैं।

- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, एक तर्क तभी सत्य होता है जब वह सभी परिस्थितियों में समान रूप से लागू हो। यह दावा केवल धार्मिक संदर्भ में सही हो सकता है, लेकिन यह सार्वभौमिक नहीं है।

- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत का दावा व्याप्ति सिद्धांत पर खरा नहीं उतरता और इसे सभी के लिए मान्य नहीं माना जा सकता।

आयत 9

आयत का अनुवाद:
"अगर हम इन्सान को अपनी रहमत का मज़ा चखायें फिर उसको हम उससे छीन लें तो (उस वक़्त) यक़ीनन बड़ा बेआस और नाशुक्रा हो जाता है।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि ईश्वर की कृपा को छीनने पर मनुष्य नाशुक्रा हो जाता है।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह दावा अनुभव या प्रमाण के आधार पर नहीं किया गया है।

- **उदाहरण (Example):**
  मानव समाज में नकारात्मक परिस्थितियों के बावजूद सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले कई लोग पाए जाते हैं। यह दावा उन पर लागू नहीं होता।

- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, उपमान (Comparison) तभी उचित है जब वह तर्क और वास्तविकता पर आधारित हो। यह दावा उन मानदंडों को पूरा नहीं करता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल एक सामान्यीकरण है और इसे सार्वभौमिक सत्य नहीं कहा जा सकता।

आयत 10

आयत का अनुवाद:
"अगर हम तकलीफ के बाद जो उसे पहुँचती थी राहत व आराम का जाएक़ा चखाए तो ज़रूर कहने लगता है कि अब तो सब सख़्तियाँ मुझसे दफा हो गई।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि तकलीफ के बाद आराम मिलने पर मनुष्य शेख़ी करने लगता है।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह दावा हर मनुष्य पर लागू नहीं होता। कई लोग मुश्किल परिस्थितियों के बाद भी विनम्र बने रहते हैं।
- **उदाहरण (Example):**
  बौद्ध धर्म में सिखाया गया है कि कठिनाई से सीखकर व्यक्ति और अधिक परिपक्व होता है।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, यह दावा सभी मनुष्यों पर लागू नहीं होता और अतार्किक है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल सामान्यीकरण है और तर्कसंगतता के मानदंड पर खरी नहीं उतरती।

निष्कर्ष

हर आयत में न्याय दर्शन के विभिन्न तत्वों का उपयोग करके यह सिद्ध किया गया है कि ये आयतें केवल एक विशेष धार्मिक विश्वास पर आधारित हैं। तर्क, प्रमाण और व्याप्ति के अभाव के कारण ये आयतें सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार्य नन्याय दर्शन के आधार पर आयतों का विश्लेषण

आयत 11

आयत का अनुवाद:
"मगर जिन लोगों ने सब्र किया और अच्छे (अच्छे) काम किए (वह ऐसे नहीं)। ये वह लोग हैं जिनके वास्ते (ख़ुदा की) बखशिश और बहुत बड़ी (खरी) मज़दूरी है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  सब्र और अच्छे कर्म करने वालों के लिए ईश्वर की बख्शिश और बहुत बड़ी मजदूरी है।
- **हेतु (Reasoning):**
  दावा है कि ईश्वर का इनाम केवल "अच्छे कर्म" करने पर आधारित है, लेकिन "अच्छे कर्म" की परिभाषा अस्पष्ट है और विभिन्न संस्कृतियों में अलग हो सकती है।
- **उदाहरण (Example):**
  यदि कोई व्यक्ति धर्मनिरपेक्ष रूप से नेक कर्म करता है लेकिन किसी धर्म को नहीं मानता, तो क्या वह इस आयत के अनुसार "बख्शिश" का पात्र होगा?
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, किसी तर्क को प्रमाणित करने के लिए सभी संदर्भों में सत्यता आवश्यक है। यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो सार्वभौमिक सत्य नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्क और प्रेक्षण की कसौटी पर खरा नहीं उतरती और इसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयत 12

आयत का अनुवाद:
"तो जो चीज़ तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए से भेजी है उनमें से बाज़ को (सुनाने के वक़्त) शायद तुम फक़त इस ख़्याल से छोड़ देने वाले हो और तुम तंग दिल हो कि मुबादा ये लोग कह बैठें कि उन पर खज़ाना क्यों नहीं नाज़िल किया गया या (उनके तसदीक के लिए) उनके साथ कोई फरिशता क्यों न आया। तो तुम सिर्फ (अज़ाब से) डराने वाले हो।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 आयत में दावा किया गया है कि ईश्वर का संदेश "वही" के माध्यम से आया है और उसकी पुष्टि के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

- **हेतु (Reasoning):**
 तर्क दिया गया है कि "वही" ही सत्य है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया। अन्य धर्म भी अपने ग्रंथों को "ईश्वरीय" मानते हैं, तो इस दावे की विशेषता कैसे सिद्ध होगी?

- **उदाहरण (Example):**
 यदि ईश्वर ने फरिश्तों या खजानों के माध्यम से संदेश को प्रमाणित नहीं किया, तो कैसे मानें कि यह सत्य है?

- **विपरीत (Counter-Argument):**
 न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी ज्ञान का प्रमाण अनुभव या तर्क के माध्यम से दिया जाना चाहिए। इस आयत में प्रमाण का अभाव है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत केवल धार्मिक मान्यता पर आधारित है और इसे तार्किक प्रमाण के बिना सत्य नहीं माना जा सकता।

आयत 13

आयत का अनुवाद:
"क्या ये लोग कहते हैं कि उस शख़्स (तुम) ने इस (कुरान) को अपनी तरफ से गढ़ लिया है? तो तुम (उनसे साफ-साफ) कह दो कि अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो तो (ज़्यादा नहीं) ऐसे दस सूरे अपनी तरफ से गढ़ के ले आओ।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  दावा है कि यदि कुरान को "गढ़ा हुआ" माना जाता है, तो अन्य लोग भी ऐसे ही दस सूरह बना कर दिखाएं।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क अन्य धर्मों या भाषाओं के ग्रंथों के साथ तुलना नहीं करता। क्या "गढ़ने" का अर्थ केवल भाषा और शैली तक सीमित है?

- **उदाहरण (Example):**
  साहित्यिक उत्कृष्टता को सत्यता का प्रमाण नहीं माना जा सकता। कई ग्रंथ साहित्यिक रूप से उत्कृष्ट हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वे सभी ईश्वर प्रदत्त हैं।

- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, उपमान तभी उचित है जब तर्क का आधार सार्वभौमिक हो। यह दावा केवल शैली पर आधारित है, जो सत्यता का मापक नहीं हो सकता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्कहीन है क्योंकि यह सत्यता को साहित्यिक कौशल से जोड़ती है।

आयत 14

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा के सिवा जिस जिस के तुम्हें बुलाते बन पड़े मदद के वास्ते बुला लो उस पर अगर वह तुम्हारी न सुने तो समझ लो कि (ये क़ुरान) सिर्फ ख़ुदा के इल्म से नाज़िल किया गया है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  कुरान का ईश्वर के ज्ञान से नाजिल होना अन्य किसी की मदद न मिलने का प्रमाण है।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क पूर्णतः धार्मिक विश्वास पर आधारित है। अन्य ग्रंथों के समान दावे को कैसे अस्वीकार

किया जाए?

- **उदाहरण (Example):**
  ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण दिए बिना यह तर्क कैसे स्वीकार किया जाए?
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, व्याप्ति तभी सिद्ध होती है जब कारण और प्रभाव में अटूट संबंध हो। यहां यह सिद्ध नहीं होता।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति सिद्धांत पर खरी नहीं उतरती और इसे तार्किक सत्य नहीं कहा जा सकता।

आयत 15

आयत का अनुवाद:
"नेकी करने वालों में से जो शख़्स दुनिया की ज़िन्दगी और उसके रिज़क़ का तालिब हो तो हम उन्हें उनकी कारगुज़ारियों का बदला दुनिया ही में पूरा पूरा भर देते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह दावा करता है कि दुनिया में अच्छे कर्मों का इनाम तुरंत मिलता है।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क अनुभव और प्रेक्षण पर आधारित नहीं है। कई अच्छे कर्म करने वाले लोग भी कठिनाइयों का सामना करते हैं।
- **उदाहरण (Example):**
  विश्व के कई धर्मों में अच्छे कर्म के फल को अगले जीवन या कर्मफल से जोड़ा गया है।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, तर्क की सार्वभौमिकता आवश्यक है। यह आयत अनुभवजन्य सत्य के

अभाव में तार्किक नहीं है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत एक सामान्यीकरण है और इसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

निष्कर्ष

इन आयतों का विश्लेषण न्याय दर्शन के विभिन्न तत्वों के आधार पर किया गया। इनमें से अधिकांश आयतें तार्किक सत्य और प्रेक्षण के मानकों पर खरी नहीं उतरतीं और केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित हैं।

हीं हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के अनुसार विश्लेषण

आयत 16

आयत का अनुवाद:
"मगर (हाँ) ये वह लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में (जहन्नुम की) आग के सिवा कुछ नहीं और जो कुछ दुनिया में उन लोगों ने किया धरा था सब अकारत (बर्बाद) हो गया और जो कुछ ये लोग करते थे सब मलियामेट हो गया।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  जो लोग अल्लाह पर विश्वास नहीं करते, उनके सारे कर्म व्यर्थ हो जाते हैं, और उनके लिए केवल जहन्नुम है।

- **हेतु (Reasoning):**
  तर्क यह है कि अल्लाह के प्रति विश्वास के बिना किए गए कर्मों का कोई मूल्य नहीं। यह न्याय के

सार्वभौमिक सिद्धांत का उल्लंघन करता है, क्योंकि किसी भी कर्म का मूल्य उसकी नैतिकता और परिणामों पर आधारित होना चाहिए।

- **उदाहरण (Example):**
  एक व्यक्ति जो पूरी मानवता के लिए अच्छा करता है लेकिन किसी धर्म में विश्वास नहीं रखता, क्या उसके कर्म भी व्यर्थ माने जाएंगे?

- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन और भगवद गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) के अनुसार, कर्म का महत्व उसके नैतिक उद्देश्य और प्रयास में निहित है, न कि किसी विशेष आस्था पर।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्कहीन है क्योंकि यह बिना आधार के कर्मों का मूल्य तय करती है।

आयत 17

आयत का अनुवाद:
"तो क्या जो शख़्स अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हो और उसके पीछे ही पीछे उनका एक गवाह हो और उसके क़बल मूसा की किताब (तौरैत) जो (लोगों के लिए) पेशवा और रहमत थी (उसकी तसदीक़ करती हो वह बेहतर है या कोई दूसरा)..."

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  कुरान को सत्य और तर्कसंगत मानने के लिए मूसा की किताब (तौरैत) की पुष्टि आवश्यक है।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क सत्यापित स्रोत पर निर्भर है, लेकिन स्वयं तौरैत का प्रमाण क्या है? यह प्रमाण चक्राकार तर्क (Circular Reasoning) का उदाहरण बनता है।

- **उदाहरण (Example):**
  अगर तौरैत गलत साबित हो जाए, तो कुरान की सत्यता पर भी प्रश्न उठेगा।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी तर्क को प्रमाणित करने के लिए स्वतंत्र और सार्वभौमिक प्रमाण आवश्यक है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के आधार पर कमजोर है और इसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयत 18

आयत का अनुवाद:
"और ये जो शख़्स ख़ुदा पर झूठ मूठ बोहतान बांधे उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा..."

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ईश्वर पर झूठा आरोप लगाने वाला सबसे बड़ा जालिम है।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और सार्वभौमिक दृष्टिकोण से इसकी पुष्टि नहीं होती।
- **उदाहरण (Example):**
  एक व्यक्ति जो ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता, क्या वह जालिम होगा? नैतिकता केवल आस्था पर आधारित नहीं होनी चाहिए।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन और वेदांत के अनुसार, नैतिकता और सत्य तर्क और अनुभव पर आधारित होने

चाहिए।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत असंगत है क्योंकि इसका आधार केवल धार्मिक विश्वास है।

आयत 19

आयत का अनुवाद:
"जो ख़ुदा के रास्ते से लोगों को रोकते हैं और उसमें कज़ी (टेढ़ा पन) निकालना चाहते हैं और यही लोग आख़िरत के भी मुन्किर है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  जो लोग अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं, वे गलत हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क ईश्वर की धारणा पर आधारित है। लेकिन इसका सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है कि कौन सा मार्ग "अल्लाह का मार्ग" है।

- **उदाहरण (Example):**
  क्या अन्य धर्मों का पालन करने वाले लोग भी इसी परिभाषा में आएंगे?

- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, मार्ग की सत्यता को अनुभव और तर्क द्वारा प्रमाणित किया जाना चाहिए।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत असंगत और पक्षपाती है।

आयत 20

आयत का अनुवाद:
"ये लोग रुए ज़मीन में न ख़ुदा को हरा सकते है और न ख़ुदा के सिवा उनका कोई सरपरस्त होगा..."

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  अल्लाह के खिलाफ कोई ताकत नहीं टिक सकती।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क केवल ईश्वर की शक्ति को मानकर चलता है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  अन्य धर्मों में भी उनके ईश्वर की सर्वोच्चता का दावा है।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, कोई भी तर्क स्वतंत्र प्रमाण और अनुभव पर आधारित होना चाहिए।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत अन्य धार्मिक विश्वासों की तरह ही असत्यापित दावा करती है।

निष्कर्ष

इन आयतों का विश्लेषण न्याय दर्शन के विभिन्न तत्वों के माध्यम से किया गया। अधिकांश आयतें केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और तार्किक प्रमाण या सार्वभौमिक नैतिकता के मानकों पर खरी नहीं उतरतीं।

आयतों का न्याय दर्शन के अनुसार विश्लेषण

आयत 21

आयत का अनुवाद:
"ये वह लोग हैं जिन्होंने कुछ अपना ही घाटा किया और जो इफ़्तेरा परदाज़ियाँ (झूठी बातें) ये लोग करते थे (क़यामत में सब) उन्हें छोड़ के चल होगी।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  जो लोग अल्लाह पर झूठे आरोप लगाते हैं, वे अपना ही नुकसान करते हैं।
- **हेतु (Reasoning):**
  तर्क यह है कि "क़यामत" के दिन झूठे लोगों का नुकसान होगा। लेकिन क़यामत की अवधारणा का कोई अनुभवजन्य या तर्कसंगत प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन और वैदिक दर्शन में, फल प्राप्ति कर्म के आधार पर होती है, न कि किसी विशिष्ट धार्मिक मान्यता पर।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  बिना प्रमाण के क़यामत का दावा व्याप्ति (Universal Truth) **का उल्लंघन करता है।**
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाणहीन धारणा पर आधारित है और सार्वभौमिक रूप से मान्य नहीं है।

आयत 22

आयत का अनुवाद:
"इसमें शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में बड़े घाटा उठाने वाले होगें।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आख़िरत में वे लोग हानि उठाएंगे जिन्होंने ईश्वर को अस्वीकार किया।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क एक पक्षपातपूर्ण धारणा पर आधारित है कि आख़िरत और ईश्वर का अस्तित्व सत्य है।

- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) के अनुसार, कर्मों का परिणाम केवल कर्म के उद्देश्य और प्रयास पर निर्भर करता है, किसी धार्मिक विश्वास पर नहीं।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, किसी कथन की सत्यता को सार्वभौमिक प्रमाण द्वारा स्थापित किया जाना चाहिए।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्कहीन और गैर-सार्वभौमिक है।

आयत 23

आयत का अनुवाद:
"बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए और अपने परवरदिगार के सामने आजज़ी से झुके यही लोग जन्नती हैं कि ये बेहिश्त में हमेशा रहेगें।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  केवल ईमान और अल्लाह के प्रति समर्पण करने वाले लोग जन्नत में जाएंगे।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क नैतिकता को धर्म पर निर्भर करता है। लेकिन क्या केवल धार्मिक विश्वास किसी के कर्मों का मापदंड हो सकता है?
- **उदाहरण (Example):**
  गीता (अध्याय 3, श्लोक 19) में कहा गया है कि केवल कर्म करना ही धर्म है, न कि किसी विशेष विश्वास में समर्पण।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  नैतिकता और न्याय का आधार तर्क और कर्म होना चाहिए, न कि विशेष धार्मिक आस्था।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत सीमित दृष्टिकोण पर आधारित है और मानवता के लिए उपयुक्त नहीं है।

आयत 24

आयत का अनुवाद:
"(काफिर, मुसलमान) दोनों फरीक़ की मसल अन्धे और बहरे और देखने वाले और सुनने वाले की सी है। क्या ये दोनो मसल में बराबर हो सकते हैं?"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition):
  काफिर (अल्लाह को न मानने वाले) अंधे और बहरे के समान हैं, जबकि ईमान वाले देख और सुन सकते हैं।
- हेतु (Reasoning):
  यह तुलना पक्षपातपूर्ण है और यह मानती है कि केवल धार्मिक विश्वास ही "देखने" और "सुनने" की योग्यता प्रदान करता है।
- उदाहरण (Example):
  वैदिक दर्शन में, ज्ञान और अनुभव ही सत्य को समझने के लिए आवश्यक हैं, न कि विशेष धर्म।
- विपरीत (Counter-Argument):
  यह तुलना अन्य धर्मों और मान्यताओं का अपमान करती है।
- निगमन (Conclusion):
  यह आयत तर्कहीन और भेदभावपूर्ण है।

आयत 25

आयत का अनुवाद:
"(और उन्होने अपनी क़ौम से कहा कि) मैं तो तुम्हारा (अज़ाबे ख़ुदा से) सरीही धमकाने वाला हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition):
  नूह अपनी कौम को अज़ाब से धमकाते हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क डर पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के अनुसार, सत्य को प्रमाणित करने का उचित माध्यम नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक परंपरा में, सत्य का ज्ञान प्रेम और तर्क के माध्यम से होता है, न कि डराने से।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  डर आधारित दृष्टिकोण नैतिकता और मानवता के विरुद्ध है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत मानवता के लिए गलत संदेश देती है।

निष्कर्ष

इन आयतों का विश्लेषण न्याय दर्शन के विभिन्न तत्वों के आधार पर किया गया। इनमें कई तर्क पक्षपातपूर्ण, भेदभावपूर्ण और बिना प्रमाण के हैं। ये आयतें सार्वभौमिक नैतिकता और न्याय के मानदंडों पर खरे नहीं उतरतीं।

आयतों का न्याय दर्शन के अनुसार विश्लेषण

आयत 21

आयत का अनुवाद:
"ये वह लोग हैं जिन्होंने कुछ अपना ही घाटा किया और जो इफ़्तेरा परदाज़ियाँ (झूठी बातें) ये लोग करते थे (क़यामत में सब) उन्हें छोड़ के चल होगी।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  जो लोग अल्लाह पर झूठे आरोप लगाते हैं, वे अपना ही नुकसान करते हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  तर्क यह है कि "क़यामत" के दिन झूठे लोगों का नुकसान होगा। लेकिन क़यामत की अवधारणा का कोई अनुभवजन्य या तर्कसंगत प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन और वैदिक दर्शन में, फल प्राप्ति कर्म के आधार पर होती है, न कि किसी विशिष्ट धार्मिक मान्यता पर।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  बिना प्रमाण के क़यामत का दावा व्याप्ति (Universal Truth) का उल्लंघन करता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाणहीन धारणा पर आधारित है और सार्वभौमिक रूप से मान्य नहीं है।

आयत 22

आयत का अनुवाद:
"इसमें शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में बड़े घाटा उठाने वाले होगें।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आख़िरत में वे लोग हानि उठाएंगे जिन्होंने ईश्वर को अस्वीकार किया।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क एक पक्षपातपूर्ण धारणा पर आधारित है कि आख़िरत और ईश्वर का अस्तित्व सत्य है।
- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) के अनुसार, कर्मों का परिणाम केवल कर्म के उद्देश्य और प्रयास पर निर्भर करता है, किसी धार्मिक विश्वास पर नहीं।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, किसी कथन की सत्यता को सार्वभौमिक प्रमाण द्वारा स्थापित किया जाना चाहिए।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्कहीन और गैर-सार्वभौमिक है।

आयत 23

आयत का अनुवाद:
"बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए और अपने परवरदिगार के सामने आजज़ी से झुके यही लोग जन्नती हैं कि ये बेहिश्त में हमेशा रहेगें।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  केवल ईमान और अल्लाह के प्रति समर्पण करने वाले लोग जन्नत में जाएंगे।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क नैतिकता को धर्म पर निर्भर करता है। लेकिन क्या केवल धार्मिक विश्वास किसी के कर्मों का मापदंड हो सकता है?
- **उदाहरण (Example):**
  गीता (अध्याय 3, श्लोक 19) में कहा गया है कि केवल कर्म करना ही धर्म है, न कि किसी विशेष विश्वास में समर्पण।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  नैतिकता और न्याय का आधार तर्क और कर्म होना चाहिए, न कि विशेष धार्मिक आस्था।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत सीमित दृष्टिकोण पर आधारित है और मानवता के लिए उपयुक्त नहीं है।

आयत 24

आयत का अनुवाद:
"(काफिर, मुसलमान) दोनों फरीक़ की मसल अन्धे और बहरे और देखने वाले और सुनने वाले की सी है। क्या ये दोनो मसल में बराबर हो सकते हैं?"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  काफिर (अल्लाह को न मानने वाले) अंधे और बहरे के समान हैं, जबकि ईमान वाले देख और सुन सकते हैं।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तुलना पक्षपातपूर्ण है और यह मानती है कि केवल धार्मिक विश्वास ही "देखने" और "सुनने" की योग्यता प्रदान करता है।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में, ज्ञान और अनुभव ही सत्य को समझने के लिए आवश्यक हैं, न कि विशेष धर्म।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  यह तुलना अन्य धर्मों और मान्यताओं का अपमान करती है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्कहीन और भेदभावपूर्ण है।

आयत 25

आयत का अनुवाद:
"(और उन्होने अपनी क़ौम से कहा कि) मैं तो तुम्हारा (अज़ाबे ख़ुदा से) सरीही धमकाने वाला हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह अपनी कौम को अज़ाब से धमकाते हैं।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क डर पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के अनुसार, सत्य को प्रमाणित करने का उचित माध्यम नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक परंपरा में, सत्य का ज्ञान प्रेम और तर्क के माध्यम से होता है, न कि डराने से।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  डर आधारित दृष्टिकोण नैतिकता और मानवता के विरुद्ध है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत मानवता के लिए गलत संदेश देती है।

निष्कर्ष

इन आयतों का विश्लेषण न्याय दर्शन के विभिन्न तत्वों के आधार पर किया गया। इनमें कई तर्क पक्षपातपूर्ण, भेदभावपूर्ण और बिना प्रमाण के हैं। ये आयतें सार्वभौमिक नैतिकता और न्याय के मानदंडों पर खरे नहीं उतरतीं।

आयतों का न्याय दर्शन के अनुसार विश्लेषण

आयत 26

आयत का अनुवाद:
"(और) ये (समझता हूँ) कि तुम ख़ुदा के सिवा किसी की परसतिश न करो। मैं तुम पर एक दर्दनाक दिन (क़यामत) के अज़ाब से डराता हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  अल्लाह के सिवा किसी की पूजा न करना और क़यामत के अज़ाब से डरना।
- **हेतु (Reasoning):**
  तर्क यह है कि अल्लाह को न मानने से क़यामत के दिन सज़ा होगी।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, तर्क और प्रमाण के बिना भय उत्पन्न करना अनुचित है। गीता (अध्याय 16, श्लोक 8) में बताया गया है कि तर्क और विवेक के बिना अंधविश्वास को बढ़ावा नहीं देना चाहिए।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  केवल डर आधारित धर्म का प्रचार करने से स्वतंत्र सोच और विवेक को बाधा पहुँचती है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्कहीन और भय पैदा करने वाली है, जो मानवता के लिए उचित संदेश नहीं देती।

आयत 27

आयत का अनुवाद:
"तो उनके सरदार जो काफ़िर थे कहने लगे कि हम तो तुम्हें अपना ही सा एक आदमी समझते हैं और हम तो देखते हैं कि तुम्हारे पैरोकार हुए भी हैं तो बस सिर्फ हमारे चन्द रज़ील (नीच) लोग (और वह भी बे सोचे समझे सरसरी नज़र में) और हम तो अपने ऊपर तुम लोगों की कोई फज़ीलत नहीं देखते बल्कि तुम को झूठा समझते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह और उनके अनुयायी "नीच" माने गए और उनके संदेश को झूठा कहा गया।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तुलना अनुचित है क्योंकि किसी व्यक्ति के सामाजिक स्तर के आधार पर उनके सत्य को खारिज करना न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में सत्य को जांचने के लिए प्रमाण, तर्क और अनुभव आवश्यक हैं, न कि सामाजिक स्थिति।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  यह आयत असमानता और भेदभाव को बढ़ावा देती है।
- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत का संदेश भेदभावपूर्ण है और यह मानवता के लिए अनुचित है।

आयत 28

आयत का अनुवाद:
"(नूह ने) कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुमने ये समझा है कि अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ से एक रौशन दलील पर हूँ और उसने अपनी सरकार से रहमत (नुबूवत) अता फरमाई और वह तुम्हें सुझाई नहीं देती तो क्या मैं उसको (ज़बरदस्ती) तुम्हारे गले मंढ़ सकता हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह का दावा है कि उन्हें अल्लाह से "रौशन दलील" और रहमत मिली है।
- **हेतु (Reasoning):**
  "रौशन दलील" का कोई स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक परंपरा में, प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द) के बिना कोई भी दावा सत्य नहीं माना जाता।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  बिना प्रमाण के दावा करना न्याय दर्शन के विपरीत है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण की अनुपस्थिति में असत्य प्रतीत होती है।

आयत 29

आयत का अनुवाद:
"और तुम हो कि उसको नापसन्द किए जाते हो और ऐ मेरी क़ौम मैं तो तुमसे इसके सिले में कुछ माल का तालिब नहीं। मेरी मज़दूरी तो सिर्फ ख़ुदा के ज़िम्मे है और मैं तो तुम्हारे कहने से उन लोगों को जो इमान ला चुके हैं निकाल नहीं सकता (क्योंकि) ये लोग भी ज़रुर अपने परवरदिगार के हुज़ूर में हाज़िर होगें मगर मैं तो देखता हूँ कि कुछ तुम ही लोग (नाहक़) जिहालत करते हो।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह का कहना है कि वह ईमान लाने वालों को समाज से बाहर नहीं करेंगे।
- **हेतु (Reasoning):**
  यहां "ईमान" की धारणा का उपयोग एकमात्र आधार के रूप में किया गया है, जो तर्कसंगत दृष्टिकोण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में, कर्म और गुणों का मापन उनके कार्यों से होता है, न कि किसी धार्मिक आस्था से।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  यह आयत न्याय और समानता की अवधारणा का पालन नहीं करती।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत धार्मिक भेदभाव को बढ़ावा देती है।

आयत 30

आयत का अनुवाद:
"और मेरी क़ौम अगर मैं इन (बेचारे ग़रीब) (ईमानदारों) को निकाल दूँ तो ख़ुदा (के अज़ाब) से (बचाने में) मेरी मदद कौन करेगा। तो क्या तुम इतना भी ग़ौर नहीं करते।"

चुना गया न्याय तत्व: विप्रतिपत्ति (Contradiction)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह का दावा है कि ईमानदारों को निकालने पर उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला कोई नहीं होगा।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क भय आधारित है, जो न्याय दर्शन के अनुसार अस्वीकार्य है।
- **उदाहरण (Example):**
  गीता (अध्याय 4, श्लोक 7) में धर्म की रक्षा के लिए भय नहीं, बल्कि कर्तव्य पर बल दिया गया है।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  अज़ाब की अवधारणा बिना प्रमाण के डराने का साधन है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तार्किक दृष्टिकोण से कमजोर है और मानवता के लिए अनुपयुक्त है।

निष्कर्ष

इन आयतों में मुख्यतः भय, भेदभाव, और बिना प्रमाण के दावे किए गए हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, ये आयतें मानवता और सार्वभौमिक नैतिकता के लिए अनुचित हैं।

न्याय दर्शन के आधार पर आयतों का विश्लेषण

आयत 31

आयत का अनुवाद:
"और मैं तो तुमसे ये नहीं कहता कि मेरे पास खुदाई ख़ज़ाने हैं और न (ये कहता हूँ कि) मैं ग़ैब दां हूँ (ग़ैब का जानने वाला) और न ही ये कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ और जो लोग तुम्हारी नज़रों में ज़लील हैं, उन्हें मैं ये नहीं कहता कि ख़ुदा उनके साथ भलाई नहीं करेगा। उन लोगों के दिलों की बात ख़ुदा ही खूब जानता है और अगर मैं ऐसा कहूँ तो मैं भी यक़ीनन ज़ालिम हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition):
  नूह ने दावा किया कि उनके पास दिव्य ज्ञान या शक्ति नहीं है, लेकिन वे सत्य संदेश दे रहे हैं।
- हेतु (Reasoning):
  यह तर्क ग़लत है क्योंकि दैवीय संदेश का दावा बिना किसी स्पष्ट प्रमाण या तर्क के किया गया है।
- उदाहरण (Example):
  न्याय दर्शन के अनुसार, कोई भी दावा तभी वैध माना जाता है जब उसके पीछे प्रत्यक्ष, अनुमान, और शब्द प्रमाण हो।
- विपरीत (Counter-Argument):
  केवल यह कहना कि "ख़ुदा दिलों की बात जानता है" पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यह कथन तर्क और प्रमाण की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।
- निगमन (Conclusion):
  यह आयत बिना प्रमाण के विश्वास की वकालत करती है, जो न्याय दर्शन के अनुसार अस्वीकार्य है।

आयत 32

आयत का अनुवाद:
"वह लोग कहने लगे, ऐ नूह, तुम हमसे यक़ीनन झगड़े और बहुत झगड़े। फिर अगर तुम सच्चे हो तो जिस (अज़ाब) की तुम हमें धमकी देते थे, उसे हम पर ला चुको।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह के विरोधियों ने उनके अज़ाब के दावे को चुनौती दी और प्रमाण मांगा।
- **हेतु (Reasoning):**
  नूह ने दावा किया कि अज़ाब आएगा, लेकिन इसका कोई प्रमाण या समय नहीं दिया।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में, केवल धमकी देकर भय पैदा करना, बिना प्रमाण के तर्कहीन है।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  बिना किसी स्पष्ट प्रमाण के, "अज़ाब" का दावा एक मिथ्या तर्क प्रतीत होता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  इस आयत में केवल डर फैलाने की कोशिश की गई है, जो मानवता के लिए अनुचित है।

आयत 33

आयत का अनुवाद:
"नूह ने कहा, अगर चाहेगा तो बस ख़ुदा ही तुम पर अज़ाब लाएगा और तुम लोग किसी तरह उसे हरा नहीं सकते। और अगर मैं चाहूँ तो तुम्हारी (कितनी ही) ख़ैर ख़्वाही (भलाई) करूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह का दावा है कि अज़ाब केवल ख़ुदा की इच्छा पर निर्भर है।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह कथन न्याय दर्शन के "कार्य-कारण संबंध" के नियम का उल्लंघन करता है, क्योंकि इसका कोई तार्किक आधार नहीं है।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में, हर कार्य का एक कारण होता है जिसे प्रमाणित किया जा सकता है।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  "ख़ुदा चाहेगा" जैसे कथन कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार प्रस्तुत नहीं करते।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल अंधविश्वास को बढ़ावा देती है।

आयत 34

आयत का अनुवाद:
"अगर ख़ुदा को तुम्हारा बहकाना मंज़ूर है तो मेरी ख़ैर ख़्वाही कुछ भी तुम्हारे काम नहीं आ सकती। वही तुम्हारा परवरदिगार है और उसी की तरफ तुम को लौट जाना है।"

चुना गया न्याय तत्व: विप्रतिपत्ति (Contradiction)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition):
  नूह का दावा है कि ख़ुदा की इच्छा से ही लोग बहकते हैं।
- हेतु (Reasoning):
  यह तर्क न्याय दर्शन के "आत्मा की स्वतंत्रता" के सिद्धांत का खंडन करता है।
- उदाहरण (Example):
  वैदिक दर्शन के अनुसार, हर व्यक्ति को अपनी इच्छा और कर्म के आधार पर कार्य करने की स्वतंत्रता है।
- विपरीत (Counter-Argument):
  "ख़ुदा की इच्छा" पर सब कुछ निर्भर होना मानव स्वतंत्रता और नैतिक जिम्मेदारी को नकारता है।
- निगमन (Conclusion):
  यह आयत तार्किक रूप से विरोधाभासी है और मानवता के लिए अस्वीकार्य है।

आयत 35

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) क्या (कुफ़्फ़ारे मक्का भी) कहते हैं कि कुरान को उस (तुम) ने गढ़ लिया है? तुम कह दो कि अगर मैंने उसे गढ़ा है तो मेरे गुनाह का वबाल मुझ पर होगा और तुम लोग जो (गुनाह करके) मुजरिम होते हो, उससे मैं बरीउल ज़िम्मा (अलग) हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  मोहम्मद ने यह दावा किया कि यदि उन्होंने कुरान गढ़ा होता, तो उसका पाप उनके ऊपर होता।
- **हेतु (Reasoning):**
  यह तर्क प्रमाण और सत्यापन के बिना है।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में, सत्य का आधार प्रमाण होता है, न कि केवल व्यक्तिगत स्वीकारोक्ति।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  यह आयत प्रमाण के अभाव में, कुरान के दिव्य होने का दावा करती है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के सत्यापन सिद्धांत का पालन नहीं करती।

निष्कर्ष

इन आयतों में तर्क और प्रमाण के बजाय केवल भय, अंधविश्वास और दैवीय शक्ति के दावों पर जोर दिया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, ये आयतें मानवता के लिए उपयुक्त संदेश नहीं देती हैं।

न्याय दर्शन के आधार पर आयतों का विश्लेषण

आयत 36

आयत का अनुवाद:
"और नूह के पास ये 'वही' भेज दी गई कि जो ईमान ला चुका उनके सिवा अब कोई शख़्स तुम्हारी क़ौम से हरगिज़ ईमान न लाएगा। तो तुम ख्वाहमा ख़्वाह उनकी कारस्तानियों का (कुछ) ग़म न खाओ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ईमान न लाने वालों को नूह ने पहले से ही नकार दिया और कहा कि वे अब ईमान नहीं लाएंगे।

- **हेतु (Reasoning):**
  बिना किसी स्वतंत्रता के यह दावा किया गया कि अब कोई और व्यक्ति ईमान नहीं लाएगा। यह न्याय दर्शन के "स्वतंत्र इच्छा" और "मानव विकल्प" के सिद्धांत के विपरीत है।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक परंपरा में, हर व्यक्ति को आत्मा और कर्म के आधार पर सुधार की स्वतंत्रता है।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  किसी के भविष्य को पूर्वनिर्धारित कहना मानवता की स्वतंत्रता और प्रयास को नकारता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के "कार्य-कारण" और "व्यक्ति की स्वतंत्रता" के सिद्धांत का खंडन करती है।

आयत 37

आयत का अनुवाद:
"और (बिस्मिल्लाह करके) हमारे रुबरु और हमारे हुक्म से कश्ती बना डालो और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उनके बारे में मुझसे सिफारिश न करना क्योंकि ये लोग ज़रुर डुबा दिए जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह घोषित किया गया कि ज़ुल्म करने वाले डुबा दिए जाएंगे और उनके लिए सिफारिश नहीं की जा सकती।
- **हेतु (Reasoning):**
  "ज़ुल्म" का कोई स्पष्ट परिभाषा या मापदंड नहीं दिया गया।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में, सजा का आधार स्पष्ट, तर्कसंगत और सार्वभौमिक होना चाहिए।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  सिफारिश का निषेध और "डुबोने" का निर्णय बिना किसी तर्कसंगत आधार के है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्यक्तिगत सुधार की संभावना को समाप्त कर देती है और अंधाधुंध सजा को बढ़ावा देती है।

आयत 38

आयत का अनुवाद:
"और नूह कश्ती बनाने लगे और जब कभी उनकी क़ौम के सरबर आवुरदा लोग उनके पास से गुज़रते थे तो उनसे मसख़रापन करते। नूह (जवाब में) कहते कि अगर इस वक़्त तुम हमसे मसखरापन करते हो तो जिस तरह तुम हम पर हँसते हो, हम तुम पर एक वक़्त हँसेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह ने उनकी आलोचना करने वालों को चेतावनी दी कि भविष्य में वे मजाक का विषय बनेंगे।
- **हेतु (Reasoning):**
  आलोचना का जवाब केवल भविष्य की धमकियों के साथ दिया गया, तर्कसंगत जवाब नहीं।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन के अनुसार, विवाद का समाधान तर्क और प्रमाण के आधार पर होना चाहिए, न कि प्रतिशोध के।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  उपहास के जवाब में तर्कहीन धमकी देने से संवाद की संभावना समाप्त होती है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत वैचारिक असहमति के लिए तर्कसंगत समाधान प्रस्तुत करने में विफल रहती है।

आयत 39

आयत का अनुवाद:
"और तुम्हें अनक़रीब ही मालूम हो जाएगा कि किस पर अज़ाब नाज़िल होता है कि (दुनिया में) उसे रुसवा कर दे और किस पर (क़यामत में) दाइमी अज़ाब नाज़िल होता है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  भविष्य में अज़ाब की चेतावनी दी गई है।
- **हेतु (Reasoning):**
  अज़ाब का समय, प्रक्रिया और तर्क स्पष्ट नहीं हैं।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक शास्त्रों में, हर कार्य का परिणाम स्पष्ट रूप से समझाया गया है।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  केवल अज्ञात भविष्य की धमकी देना, तर्कसंगत ज्ञान प्रदान करने में विफल है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत केवल डर और अंधविश्वास को बढ़ावा देती है।

आयत 40

आयत का अनुवाद:
"यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा और तन्नूर से जोश मारने लगा तो हमने हुक्म दिया (ऐ नूह) हर किस्म के जानदारों में से (नर मादा का) जोड़ा (यानि) दो दो ले लो और जिस (की) हलाकत (तबाही) का हुक्म पहले ही हो चुका हो उसके सिवा अपने सब घर वाले और जो लोग ईमान ला चुके उन सबको कश्ती (नाँव) में बैठा लो और उनके साथ ईमान भी थोड़े ही लोग लाए थे।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  केवल नूह और उनके अनुयायियों को बचाया गया।
- **हेतु (Reasoning):**
  नैतिकता के आधार पर अन्य लोगों को मौका न देकर एकतरफा चयन अन्यायपूर्ण है।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन और वैदिक ग्रंथों में, किसी भी व्यक्ति को सुधार का अवसर दिया जाना चाहिए।
- **विपरीत (Counter-Argument):**
  केवल "ईमान लाने वालों" को बचाना और बाकी को डुबाना अंध विश्वास और पक्षपात को दर्शाता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत मानवता के समतामूलक दृष्टिकोण के खिलाफ है।

सारणी (समस्या का सार)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
36	**प्रमेय**	**मानव स्वतंत्रता का उल्लंघन।**
37	**व्याप्ति**	**तर्कसंगत आधार का अभाव।**
38	**उपमान**	**संवाद में प्रतिशोध का उपयोग।**
39	**प्रमाण**	**अज़ाब के लिए स्पष्ट तर्क का अभाव।**
40	**व्याप्ति**	**पक्षपात और अन्याय।**

निष्कर्ष

इन आयतों में तार्किक आधार की कमी, डर पर आधारित सिद्धांत, और न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन स्पष्ट है। न्याय दर्शन के अनुसार, ये आयतें मानवता के लिए प्रेरणादायक नहीं हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 41

आयत का अनुवाद:
"और नूह ने (अपने साथियों से) कहा, 'बिस्मिल्लाह मज़रीहा मुरसाहा (ख़ुदा ही के नाम से उसका बहाओ और ठहराओ है)। कश्ती में सवार हो जाओ। बेशक मेरा परवरदिगार बड़ा बख्शने वाला, मेहरबान है।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह ने बताया कि कश्ती का संचालन और ठहराव ईश्वर के नाम पर होगा।
- **हेतु (Reasoning):**
  इसका कोई तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार नहीं है कि सिर्फ नाम लेने से कोई वस्तु चल या ठहर सकती है।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक दर्शन में भी यज्ञ और कर्म का महत्व है, लेकिन उनका आधार प्रयास और परिणाम है, मात्र नाम नहीं।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत तर्कसंगत क्रियाओं और वैज्ञानिक नियमों की बजाय अंधविश्वास को बढ़ावा देती है।

आयत 42

आयत का अनुवाद:
"और कश्ती है कि पहाड़ों की सी (ऊँची) लहरों में उन लोगों को लिए हुए चली जा रही है। और नूह ने अपने बेटे को, जो उनसे अलग थलग एक गोशे (कोने) में था, आवाज़ दी, 'ऐ मेरे फरज़न्द! हमारी कश्ती में सवार हो लो और काफिरों के साथ न रह।'"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह ने अपने बेटे को कश्ती में सवार होने और "काफिरों" के साथ न रहने को कहा।
- **हेतु (Reasoning):**
  यहाँ काफिरों को डूबने की चेतावनी दी गई, लेकिन कोई तार्किक संवाद या सुधार का प्रयास नहीं किया गया।
- **उदाहरण (Example):**
  वैदिक परंपरा में, पुत्र को चेतावनी और शिक्षा दी जाती है, न कि केवल डराने या बहिष्कृत करने का आदेश।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत संवाद और सुधार की संभावना के विपरीत है और अंध विश्वास को प्रेरित करती है।

आयत 43

आयत का अनुवाद:
"(मुझे माफ कीजिए) 'मैं तो अभी किसी पहाड़ का सहारा पकड़ता हूँ जो मुझे पानी (में डूबने) से बचा लेगा।' नूह ने (उससे) कहा, '(अरे कम्बख़्त) आज ख़ुदा के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं, मगर ख़ुदा ही जिस पर रहम फरमाएगा।' और (ये बात हो रही थी कि) यकायक दोनों बाप बेटे के दरम्यान एक मौज हाएल हो गई और वह डूब कर रह गया।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह के बेटे ने पहाड़ पर चढ़कर बचने की कोशिश की, लेकिन उसे डूबा दिया गया।
- **हेतु (Reasoning):**
  पहाड़ पर चढ़ने से बचाव हो सकता था, लेकिन "अल्लाह के अज़ाब" को अचूक और अपरिहार्य बताया गया।
- **उदाहरण (Example):**
  प्राकृतिक आपदाओं में सुरक्षा के उपाय हमेशा तार्किक होते हैं, लेकिन यहां अंधविश्वास के आधार पर उसे निष्फल बताया गया।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय दर्शन के "तर्क और कार्य" के सिद्धांत के खिलाफ है।

आयत 44

आयत का अनुवाद:
"और (ग़ैब ख़ुदा की तरफ से) हुक्म दिया गया कि, 'ऐ ज़मीन! अपना पानी जज़्ब कर, और ऐ आसमान! (बरसने से) थम जा।' और पानी घट गया और (लोगों का) काम तमाम कर दिया गया। और कश्ती वहीं (पहाड़) पर जा ठहरी। और (चारो तरफ) पुकार दिया गया कि ज़ालिम लोगों को (ख़ुदा की रहमत से) दूरी हो।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ज़मीन और आसमान को "आदेश" देकर पानी रोक दिया गया।
- **हेतु (Reasoning):**
  प्राकृतिक घटनाओं को आदेश देने की अवधारणा तर्क और विज्ञान के विपरीत है।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में, हर घटना का एक प्राकृतिक और तर्कसंगत कारण होता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्राकृतिक प्रक्रियाओं को तर्कसंगत रूप से समझने के बजाय अलौकिक हस्तक्षेप को बढ़ावा देती है।

आयत 45

आयत का अनुवाद:
"और (जिस वक़्त नूह का बेटा ग़रक (डूब) हो रहा था तो नूह ने अपने परवरदिगार को पुकारा और अर्ज़ की, 'ऐ मेरे परवरदिगार! इसमें तो शक नहीं कि मेरा बेटा मेरे एहल (घर वालों) में शामिल है और तूने वादा किया था कि तेरे एहल को बचा लूँगा। और इसमें शक नहीं कि तेरा वायदा सच्चा है और तू सारे (जहान) के हाकिमों से बड़ा हाकिम है।'"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह ने अपने बेटे के लिए अल्लाह से अपील की, लेकिन बेटे को नहीं बचाया गया।
- **हेतु (Reasoning):**
  "घर वालों" को बचाने का वादा करने के बावजूद, बेटे को डुबा देना वादे का उल्लंघन है।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में, किसी वादे का उल्लंघन अधर्म और अनुचित माना जाता है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत न्याय और सत्य के सिद्धांत के विपरीत है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
41	प्रमाण	नाम मात्र से कश्ती संचालन का दावा तर्कहीन है।
42	उपमान	संवाद और सुधार की संभावना समाप्त।
43	व्याप्ति	प्राकृतिक सुरक्षा उपायों का नकार।
44	प्रमेय	प्राकृतिक घटनाओं को आदेश देना तर्कहीन है।
45	प्रमाण	वादे का उल्लंघन अनुचित और अन्यायपूर्ण है।

निष्कर्ष

इन आयतों में स्पष्ट तर्क और न्याय दर्शन के तत्वों का अभाव है। घटनाओं को अंधविश्वास, भय और अलौकिक हस्तक्षेप पर आधारित प्रस्तुत किया गया है, जो मानवता और न्याय के सिद्धांतों के विपरीत है।

आयत 46:

आयत का अनुवाद: "(तू मेरे बेटे को नजात दे) ख़ुदा ने फरमाया ऐ नूह तुम (ये क्या कह रहे हो) हरगिज़ वह तुम्हारे एहल में शामिल नहीं वह बेशक बदचलन है (देखो जिसका तुम्हें इल्म नहीं है मुझसे उसके बारे में (दरख़्वास्त न किया करो और नादानों की सी बातें न करो) नूह ने अर्ज़ की ऐ मेरे परवरदिगार मै तुझ ही से पनाह माँगता हूँ कि जिस चीज़ का मुझे इल्म न हो मै उसकी दरख़्वास्त करूँ।)"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  नूह का बेटा बुरे आचरण वाला था, और ख़ुदा ने नूह से कहा कि वह उसका बेटा नहीं है।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत इस विचार को प्रस्तुत करती है कि अगर कोई व्यक्ति बुरे आचरण वाला है, तो वह परिवार का सदस्य होने के बावजूद, सही मार्ग पर नहीं हो सकता। इस पर नूह की नादानी को

दिखाया गया है, क्योंकि वह अपने बेटे की नजात के लिए दुआ कर रहे थे जबकि वह दोषी था। यह एक भ्रमित दृष्टिकोण को दिखाता है क्योंकि रिश्ते और परिवार का कोई भी सदस्य अपनी बुराई के कारण नर्क में जा सकता है।

- **न्याय दर्शन का विश्लेषण (Nyaya Critique):**
 इस आयत में स्पष्ट रूप से प्रमेय (Object of Knowledge) के सिद्धांत का उल्लंघन है। यदि कोई व्यक्ति स्वयं गलत मार्ग पर चलता है, तो उसे अपनी स्थिति सुधारने का अवसर मिलना चाहिए, न कि केवल उसके परिवारिक रिश्तों के आधार पर उसे नकारा किया जाना चाहिए। यह मानवता के लिए अस्वीकार्य है क्योंकि हर व्यक्ति को आत्म-निर्भर सुधार का अधिकार है, और यह विचार न केवल अन्यायपूर्ण है, बल्कि प्रचलित न्याय सिद्धांतों के खिलाफ भी है।
    - **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
 प्रमेय के सिद्धांत के अनुसार, एक व्यक्ति की स्थिति उसके आचरण से निर्धारित होनी चाहिए न कि उसके परिवारिक रिश्तों से। यह आयत परिवार और रिश्ते के नाम पर किसी के आत्म-निर्भर सुधार का अवसर छीनती है, जो मानवता के खिलाफ है।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत को न्याय दर्शन की दृष्टि से गलत ठहराया जा सकता है, क्योंकि यह एक व्यक्ति की व्यक्तिगत गलती के आधार पर उसके जीवन में सुधार के अवसर को नकारती है। यह आयत मानवता के समान अधिकारों के सिद्धांत के खिलाफ है।

आयत 47:

आयत का अनुवाद: "और अगर तु मुझे (मेरे कसूर न बख़्श देगा और मुझ पर रहम न खाएगा तो मैं सख़्त घाटा उठाने वालों में हो जाऊँगा (जब तूफान जाता रहा तो) हुक्म दिया गया ऐ नूह हमारी तरफ से सलामती और उन बरकतों के साथ कश्ती से उतरो।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 नूह ने ख़ुदा से माफी की प्रार्थना की और कहा कि अगर वह माफ़ नहीं करेंगे तो नूह को बहुत बड़ा

घाटा होगा।

- **हेतु (Reasoning):**
 नूह की स्थिति का कारण उनका इश्वर से माफी का अनुरोध था, और इसके बाद, ख़ुदा ने उन्हें सलामती और आशीर्वाद दिया।
    - **यह दृश्य न्याय दर्शन के "Hetu" (Reasoning) तत्व का उल्लंघन करता है। ख़ुदा की कृपा किसी व्यक्ति के दोष के आधार पर ही दी जाती है, जबकि न्याय दर्शन के अनुसार दोष और पाप को किसी भी व्यक्ति से न्यायपूर्ण तरीके से निपटना चाहिए। यह आयत आशीर्वाद के वितरण में एक एकतरफा प्रक्रिया को दिखाती है, जहाँ किसी भी व्यक्ति को सच्चे कर्मों के आधार पर न्याय मिलना चाहिए।**
- **न्याय दर्शन का विश्लेषण (Nyaya Critique):**
 इस आयत में वसूली (समाज के पापी कर्मों के खिलाफ न्याय) की कोई प्रक्रिया नहीं दी गई है। इसके बजाय यह आयत दिखाती है कि केवल ख़ुदा की कृपा पर निर्भर रहना, अपने कर्मों से नहीं सुधारने का एक गलत दृष्टिकोण है। यह आयत एकतरफा न्यायपूर्ण दृष्टिकोण को हतोत्साहित करती है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 न्याय दर्शन के अनुसार, इस प्रकार की आयत मानवता के लिए एक अपूर्ण और असमान दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह सिर्फ परमात्मा की कृपा पर आधारित है, जबकि व्यक्ति के कर्मों की उचित समीक्षा की आवश्यकता होती है। यह आयत एक निष्पक्ष और न्यायपूर्ण दृष्टिकोण का उल्लंघन करती है।

आयत 48:

आयत का अनुवाद: "जो तुम पर हैं और जो लोग तुम्हारे साथ हैं उनमें से न कुछ लोगों पर और (तुम्हारे बाद) कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें हम थोड़े ही दिन बाद बहरावर करेगें फिर हमारी तरफ से उनको दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि कुछ लोग बचेंगे, लेकिन जिन लोगों ने ख़ुदा की बातों का पालन नहीं किया, उन्हें अज़ाब मिलेगा।

- **हेतु (Reasoning):**
 यहाँ पर किसी का अनुसरण करने और अज़ाब की प्राप्ति का सीधा संबंध दिखाया गया है। लेकिन इस आयत में यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि सभी नफरत करने वालों को सजा ही मिलेगी, जो एक प्रकार का समग्रवाद है। यह विचार मानवता के लिए निंदनीय है, क्योंकि यह सिर्फ कुछ निश्चित व्यक्तियों को ही अज़ाब देने पर जोर देता है, जबकि शेष लोगों के कर्म और हक़ की कोई चर्चा नहीं है।

- **न्याय दर्शन का विश्लेषण (Nyaya Critique):**
 यह आयत न्याय दर्शन के "Vyapti" (Invariable Concomitance) **तत्व के खिलाफ है, क्योंकि किसी भी व्यक्ति के कर्मों के आधार पर उसका फल दिया जाता है, और यहाँ पर यह निश्चित करना कि कुछ ही लोग बचे रहेंगे, यह विचार पक्षपाती और अधूरा है। किसी को पूरी तरह से निर्णय देने से पहले उनकी स्थिति और कर्मों का सत्यापन होना चाहिए।**

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत का विचार निष्कलंक और संपूर्णता से अज्ञेय है, क्योंकि यह सभी के कर्मों की सही परीक्षा के बिना उन्हें सजा देने की दिशा में जाता है। यह मानवता के लिए भेदभावपूर्ण है और न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 49:

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) ये ग़ैब की चन्द ख़बरे हैं जिनको तुम्हारी तरफ वही के ज़रिए पहुँचाते हैं जो उसके क़ब्ल न तुम जानते थे और न तुम्हारी क़ौम ही (जानती थी) तो तुम सब्र करो इसमें शक नहीं कि आख़िारत (की खूबियाँ) परहेज़गारों ही के वास्ते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत ग़ैब (अज्ञेय ज्ञान) और भविष्य की घटनाओं के बारे में बताती है। पैग़ाम्बर को यह ज्ञान वही से प्राप्त हुआ, जो पहले न वह जानते थे, न उनकी क़ौम।

- **हेतु (Reasoning):**
 यह आयत ग़ैब के ज्ञान को प्रमाणित करती है, जबकि यह नैतिकता और ज्ञान के सही स्रोत पर आधारित नहीं है। न्याय दर्शन के "प्रमाण" के सिद्धांत के अनुसार, वास्तविक ज्ञान वही है जो अनुभव और साक्ष्य से पुष्टि हो, न कि केवल किसी एक स्रोत से आने वाला ग़ैब ज्ञान। यह आयत ग़ैब की बातों को एकतरफा और बिना प्रमाण के स्वीकार करती है।

- **न्याय दर्शन का विश्लेषण (Nyaya Critique):**
 न्याय दर्शन के अनुसार, प्रमाण का आधार केवल ग़ैब या अविश्वसनीय ज्ञान नहीं हो सकता। हर बात को तर्क और प्रमाण की कसौटी पर परखना चाहिए। इस आयत में ग़ैब के ज्ञान को प्रमाणित करने का कोई सटीक आधार नहीं है, और यह मानवता के लिए अवैज्ञानिक और बिना प्रमाण के है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 यह आयत ज्ञान के सही स्रोतों और प्रमाण पर आधारित नहीं है, और यह अवैज्ञानिक और तर्कहीन है। यह आयत सभी के लिए उपयुक्त नहीं है क्योंकि यह बिना प्रमाण के ग़ैब ज्ञान को एकतरफा सत्य मानती है।

आयत 50:

आयत का अनुवाद: "और (हमने) क़ौमे आद के पास उनके भाई हूद को (पैग़ाम्बर बनाकर भेजा और) उन्होनें अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम ख़ुदा ही की परसतिश करों उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं तुम बस निरे इफ़तेरा परदाज़ (झूठी बात बनाने वाले) हो।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- ****प्रतिज्ञा (**

Proposition):
हूद ने अपनी क़ौम को चेतावनी दी कि वे केवल एक ही ईश्वर की पूजा करें और बाकी सब झूठे हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  यहाँ पर कोई अन्य भगवान की पूजा करने को झूठा बताया गया है, और यह विचार न्याय दर्शन के अनुसार सही नहीं है। कोई भी विचार या पूजा गलत नहीं हो सकती जब तक उसके लिए प्रमाण या तर्क न हो।

- **न्याय दर्शन का विश्लेषण (Nyaya Critique):**
  न्याय दर्शन में, प्रत्येक कर्म का विश्लेषण और परीक्षण प्रमाणों और तर्कों पर आधारित होना चाहिए। किसी अन्य विश्वास या पूजा को झूठा मानना बिना किसी प्रमाण के, गलत है। यह आयत प्रमाण की कमी के कारण अपूर्ण है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  यह आयत गलत है क्योंकि यह किसी अन्य विश्वास को झूठा मानती है बिना किसी प्रमाण के, और यह सार्वभौमिक दृष्टिकोण के खिलाफ है।

आयत 51:

आयत का अनुवाद: "ऐ मेरी क़ौम मै उस (समझाने पर तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं माँगता मेरी मज़दूरी तो बस उस शख़्स के ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  हूद ने अपनी क़ौम से कहा कि वह अपनी मेहनत के लिए किसी से कोई शारीरिक लाभ या इनाम नहीं चाहता, बल्कि उसकी सेवाएं केवल उस परमात्मा के लिए हैं जिसने उसे पैदा किया।
- **हेतु (Reasoning):**
  इस आयत का तर्क यह है कि एक व्यक्ति को अपने प्रयासों या धर्म के बदले कोई शारीरिक लाभ या इनाम नहीं चाहिए, बल्कि उसका उद्देश्य सिर्फ ईश्वर की इच्छा की सेवा करना है। लेकिन यह विचार नैतिक रूप से त्रुटिपूर्ण हो सकता है। क्या ईश्वर की सेवा का मतलब यह हो सकता है कि मनुष्य अपने आस्थाओं के अनुसार किसी प्रकार के भौतिक लाभ को त्याग कर, केवल आध्यात्मिक कर्तव्यों का पालन करे? यह कथन न्याय दर्शन के अनुसार अस्थिरता उत्पन्न करता है।

- पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):
  "Hetu" के अनुसार, प्रत्येक तर्क को प्रमाणित किया जाना चाहिए। यदि कोई किसी को अपनी सेवाओं का भुगतान न करने के लिए कहे, तो उसके पास एक प्रमाण होना चाहिए कि यह धर्म का पालन करने से वास्तविक फल मिलता है। इस आयत में उस तर्क की अनुपस्थिति है जो साबित कर सके कि बिना किसी भौतिक लाभ के सेवा करने से ईश्वर की कृपा मिलेगी।
  - इसे नैतिक दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है, क्योंकि यह विश्वास आत्म-संप्रेषण और असत्य की संभावना को नकारता है।

- निष्कर्ष (Conclusion):
  इस आयत का विचार न्याय दर्शन के अनुसार अपर्याप्त है, क्योंकि यह सिर्फ विश्वास और भावना पर आधारित है। यह स्पष्ट तर्क की अनुपस्थिति को दर्शाता है, और इसका सार्वभौमिक रूप से समर्थन करना कठिन है, क्योंकि यह केवल आध्यात्मिकता की ओर झुका हुआ है, भौतिक वास्तविकताओं से ध्यान हटाते हुए।

आयत 52:

आयत का अनुवाद: "और ऐ मेरी क़ौम अपने परवरदिगार से मग़फिरत की दुआ माँगों फिर उसकी बारगाह में अपने (गुनाहों से) तौबा करो तो वह तुम पर मूसलाधार मेह आसमान से बरसाएगा ख़ुश्क साली न होगी और तुम्हारी क़ूवत (ताक़त) में और क़ूवत बढ़ा देगा और मुजरिम बन कर उससे मुँह न मोड़ों।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition):
  यदि लोग अपने गुनाहों से तौबा करेंगे और ख़ुदा से माफी मांगेंगे, तो ईश्वर उनकी ज़िंदगी में आशीर्वाद देगा, जैसे कि बारिश, ताकत और समृद्धि।

- हेतु (Reasoning):
  यह आयत यह मानती है कि गुनाहों से तौबा करने और ईश्वर से प्रार्थना करने से तत्काल लाभ मिलेगा। हालांकि, "Vyapti" (Invariable Concomitance) के सिद्धांत के अनुसार, किसी कारण और परिणाम के बीच सुसंगतता और निरंतरता होनी चाहिए। यह आयत एक निस्संदेह संबंध स्थापित करती है, लेकिन यह वास्तविकता से मेल नहीं खाती। कभी-कभी लोग ईश्वर से प्रार्थना

करते हैं, लेकिन तुरंत कोई भौतिक लाभ नहीं मिलता है।

  - इस प्रकार, इस आयत का संदेश सभी परिस्थितियों में सही नहीं हो सकता क्योंकि वास्तविक जीवन में लोग कभी-कभी कड़ी मेहनत और आस्था के बावजूद तत्काल लाभ नहीं प्राप्त करते। यह विचार वास्तविकता और जीवन की जटिलताओं को अनदेखा करता है।

- **न्याय दर्शन का विश्लेषण (Nyaya Critique):**
 न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे को सिद्ध करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है, और किसी घटना के संबंध में कोई निश्चित परिणाम प्रदान करने के लिए तर्कसंगतता जरूरी है। यह आयत एक सामान्य और निश्चित कारण-परिणाम संबंध स्थापित करती है, जो सुसंगत और निरंतर नहीं होता, और यह जीवन के विविध अनुभवों में ठीक साबित नहीं हो सकता।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत का तर्क "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार दोषपूर्ण है, क्योंकि यह सब समय के लिए लागू नहीं होता। यह आयत तत्काल आशीर्वाद के लिए तर्क देती है, लेकिन वास्तविकता में इसके परिणामों का अनुभव हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग हो सकता है। यह आयत सार्वभौमिक रूप से सही नहीं मानी जा सकती।

आयत 53:

आयत का अनुवाद: "वह लोग कहने लगे ऐ हूद तुम हमारे पास कोई दलील लेकर तो आए नहीं और तुम्हारे कहने से अपने ख़ुदाओं को तो छोड़ने वाले नहीं और न हम तुम पर ईमान लाने वाले हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 क़ौम के लोग हूद से कहते हैं कि वह कोई ठोस दलील या प्रमाण नहीं लाए हैं, और इसलिए वे उनका पालन नहीं करेंगे।

- **हेतु (Reasoning):**
 यहाँ पर विरोधियों का यह कहना है कि उनके पास कोई प्रमाण नहीं है, और बिना प्रमाण के किसी

बात पर विश्वास करना अवैज्ञानिक है। यह कथन न्याय दर्शन के "Hetu" (Reason) के सिद्धांत का पालन करता है, क्योंकि कोई भी दावे का समर्थन ठोस प्रमाण या तर्क के बिना नहीं किया जा सकता।

- **न्याय दर्शन का विश्लेषण (Nyaya Critique):**
 न्याय दर्शन में प्रमाण के बिना कोई भी दावा असत्य माना जाता है। क़ौम के लोग हूद के संदेश को प्रमाण के बिना अस्वीकार कर रहे हैं, जो न्यायपूर्ण है क्योंकि किसी भी दावे को प्रमाणित किया जाना चाहिए। यह विचार अच्छा है, क्योंकि यह वास्तविकता से मेल खाता है कि लोग बिना प्रमाण के किसी बात पर विश्वास नहीं करते।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत का विचार न्याय दर्शन के "Hetu" तत्व के अनुसार सही है, क्योंकि यह प्रमाण के बिना किसी भी दावे को स्वीकार नहीं करने का सिद्धांत प्रस्तुत करता है। यह सोच समझी और प्रमाण आधारित आलोचना है, जो न्यायपूर्ण है।

आयत 54:

आयत का अनुवाद: "हम तो बस ये कहते हैं कि हमारे ख़ुदाओं में से किसने तुम्हें मजनून (दीवाना) बना दिया है (इसी वजह से तुम) बहकी बहकी बातें करते हो। हूद ने जवाब दिया बेशक मै ख़ुदा को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि तुम ख़ुदा के सिवा (दूसरों को) उसका शरीक बनाते हो।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 हूद अपनी क़ौम से कहता है कि वे ख़ुदा के अलावा दूसरे देवताओं की पूजा करते हैं, और यह कार्य सत्य से दूर है।

- **हेतु (Reasoning):**
 यह आयत किसी अन्य शक्ति को स्वीकार करने को नकार रही है। हूद ने अपने क़ौम को यह समझाने की कोशिश की कि केवल ख़ुदा का ही अस्तित्व है।

- ○ न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी वस्तु या शक्ति को "प्रमेय" (Object of Knowledge) के रूप में स्वीकृत किया जाना चाहिए, जो सत्य और प्रमाण पर आधारित हो। जब तक कोई और शक्ति या देवता प्रमाणित न हो, उसे नकारना तर्कसंगत नहीं हो सकता।
  - ○ यह आयत इस विचार को प्रस्तुत करती है कि केवल एक सत्य हो सकता है, जबकि विभिन्न आस्थाएँ और विश्वास भी हो सकते हैं, जिनकी उपस्थिति को प्रमाण से सिद्ध किया जा सकता है।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  यह आयत मानवता के लिए सीमित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, क्योंकि यह अन्य विश्वासों और धार्मिक विचारों को नकारती है। न्याय दर्शन के अनुसार, यह विचार असत्य है क्योंकि यह प्रमाण की कमी से समर्थित है और नकारात्मक रूप से सार्वभौमिकता के खिलाफ है।

आयत 55:

आयत का अनुवाद: "इसमे मै बेज़ार हूँ तो तुम सब के सब मेरे साथ मक्कारी करो और मुझे (दम मारने की) मोहलत भी न दो तो मुझे परवाह नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  हूद ने अपनी क़ौम से कहा कि वे अब उसे चोट पहुँचाने की कोशिश करें, वह बिना डर के इसका सामना करेगा।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत एक आत्मविश्वास से भरी है, जहाँ हूद अपने ऊपर होने वाली किसी भी मक्कारी या उत्पीड़न से डरने वाला नहीं है, क्योंकि उसका भरोसा ईश्वर पर है।

  - ○ हालांकि, न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी कार्य को बिना तर्क या निर्णय के सामने रखना उचित नहीं है। इसके बजाय, न्याय दर्शन में, किसी कार्य के द्वारा किसी की हानि होने पर यह अधिक उचित होगा कि उसके विरोध में तर्क दिया जाए।
- **निष्कर्ष

(Conclusion):**
यह आयत न्याय दर्शन के तत्व "Hetu" के अनुसार अपर्याप्त है, क्योंकि इसमें एक नकारात्मक दृष्टिकोण है, जो बिना तर्क के किसी स्थिति से निपटने की बात करता है।

आयत 56:

आयत का अनुवाद: "मै तो सिर्फ ख़ुदा पर भरोसा रखता हूँ जो मेरा भी परवरदिगार है और तुम्हारा भी परवरदिगार है और रुए ज़मीन पर जितने चलने वाले हैं सबकी चोटी उसी के साथ है इसमें तो शक ही नहीं कि मेरा परवरदिगार (इन्साफ की) सीधी राह पर है।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  हूद का दावा है कि उनका परवरदिगार ही सही मार्ग पर है, और इस पर कोई शक नहीं किया जा सकता। वे अपनी आस्था को निरंतर सत्य मानते हैं और इसे सिद्ध करते हुए इस पर संदेह करने की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ते।

- **हेतु (Reasoning):**
  इस आयत का तर्क यह है कि भगवान ही सच्चे और न्यायपूर्ण मार्ग पर हैं, और किसी भी प्रकार का संदेह अवैध है। लेकिन न्याय दर्शन में, "Pramana" या वैध ज्ञान का सिद्धांत यह कहता है कि किसी भी दावे को प्रमाणित करना आवश्यक है। जबकि यह आयत विश्वास और निष्ठा की बात करती है, परंतु इस दावे को प्रमाणित करने के लिए कोई तर्क या विश्लेषण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

  - **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
    "Pramana" के सिद्धांत के अनुसार, सत्य को प्रमाण के माध्यम से स्वीकार किया जाता है। इस आयत में प्रमाण की अनुपस्थिति है, क्योंकि यह केवल विश्वास के आधार पर आधारित है, और किसी भौतिक या तात्त्विक प्रमाण के बिना इसे सार्वभौमिक रूप से सिद्ध करना संभव नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  यह आयत तर्क की दृष्टि से कमजोर है क्योंकि इसका दावा बिना प्रमाण के किया गया है। यह आयत केवल आस्था पर आधारित है और "Pramana" के सिद्धांत के अनुसार यह सत्य नहीं हो सकती, क्योंकि इसे किसी प्रकार के सत्यापित प्रमाण से समर्थित नहीं किया गया है।

आयत 57:

आयत का अनुवाद: "इस पर भी अगर तुम उसके हुक्म से मुँह फेरे रहो तो जो हुक्म दे कर मैं तुम्हारे पास भेजा गया था उसे तो मैं यक़ीनन पहुँचा चुका और मेरा परवरदिगार (तुम्हारी नाफरमानी पर तुम्हें हलाक करें) तुम्हारे सिवा दूसरी क़ौम को तुम्हारा जानशीन करेगा और तुम उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते इसमें तो शक नहीं है कि मेरा परवरदिगार हर चीज़ का निगेहबान है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  हूद अपनी क़ौम को चेतावनी देते हैं कि अगर वे ख़ुदा के आदेश से मुंह मोड़ते हैं, तो उनका स्थान किसी अन्य क़ौम को सौंप दिया जाएगा, और वे कुछ नहीं कर सकते।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत यह दावा करती है कि जब तक लोग ख़ुदा के आदेश का पालन करते हैं, तब तक वे सुरक्षित रहेंगे, और यदि वे नाफ़रमानी करते हैं, तो उनका स्थान अन्य लोगों को मिल जाएगा। हालांकि, "Vyapti" (Invariable Concomitance) के सिद्धांत के अनुसार, किसी कारण और परिणाम के बीच सुसंगतता और निरंतरता होनी चाहिए। यह दावे का परिणाम वास्तविकता से मेल नहीं खाता, क्योंकि यह एक निश्चित परिणाम (स्थान बदलना) निर्धारित करता है, जो सटीक और लगातार सत्य नहीं हो सकता।

  - **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
    "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, कोई घटना या कार्य अगर निरंतर और सुसंगत रूप से उत्पन्न हो, तो उसे सही माना जा सकता है। परंतु यह आयत एक निश्चित भविष्यवाणी करती है, जिसमें किसी क़ौम का स्थान बदलने की बात की जा रही है। ऐसा कोई सुसंगत प्रमाण नहीं है जो यह दिखा सके कि हर बार ऐसा होता है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत का तर्क "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार अपर्याप्त है। यह आयत एक निश्चित और निरंतर परिणाम का दावा करती है, जो सभी स्थितियों में लागू नहीं हो सकता, और इसलिए यह तर्क से समर्थन प्राप्त नहीं करता।

आयत 58:

आयत का अनुवाद: "और जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो हमने हूद को और जो लोग उसके साथ इमान लाए थे अपनी मेहरबानी से नजात दिया और उन सबको सख़्त अज़ाब से बचा लिया।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 जब ख़ुदा का आदेश आया, तो हूद और उसके अनुयायियों को बचा लिया गया, जबकि अन्य लोग अज़ाब (सज़ा) से पीड़ित हो गए।

- **हेतु (Reasoning):**
 इस आयत का दावा है कि ख़ुदा अपने पैग़म्बर और उनके अनुयायियों को हर बार बचा लेता है, जब भी वह अपना अज़ाब भेजता है। हालांकि, "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, कोई भी दावा तभी सही माना जा सकता है, जब वह हर परिस्थिति में लागू हो। यह आयत यह मानती है कि हमेशा ऐसा ही होता है, लेकिन सच्चाई यह है कि हर बार ऐसा नहीं होता है।
    - **उदाहरण के तौर पर, इतिहास में कुछ ऐसे समय भी थे जब पैग़म्बरों और उनके अनुयायियों को भी कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, जैसा कि कई संस्कृतियों और धर्मों में देखा गया है।**
    - **यह सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं होता।**
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार दोषपूर्ण है, क्योंकि यह एक निश्चित परिणाम (बचाव) की गारंटी देती है, जो हर बार सत्य नहीं होता। इस प्रकार, यह तर्क पर आधारित नहीं है और इसके पीछे कोई सुसंगत प्रमाण नहीं है।

आयत 59:

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) ये हालात क़ौमे आद के हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार की आयतों से इन्कार किया और उसके पैग़म्बरों की नाफ़रमानी की और हर सरकश (दुश्मन ख़ुदा) के हुक्म पर चलते रहें।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत क़ौमे आद के लोगों के बारे में कहती है कि उन्होंने ख़ुदा की आयतों का इन्कार किया और उसके पैग़म्बरों की नाफ़रमानी की।

- **हेतु (Reasoning):**
  इस आयत का उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि क़ौमे आद के लोग अधर्मी थे, क्योंकि उन्होंने एक सत्य ज्ञान (आयतों) को नकारा। हालांकि, "Prameya" (Object of Knowledge) के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी दावे को प्रमाणित करने के लिए उस ज्ञान या वस्तु का सही ढंग से अध्ययन किया जाना चाहिए। यह आयत सिर्फ आरोप लगाती है, बिना यह बताए कि वे लोग किस प्रकार से गलती कर रहे थे, और क्या उनके खिलाफ किसी विशेष प्रमाण या विश्लेषण की आवश्यकता थी।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  यह आयत "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार कमजोर है, क्योंकि यह किसी वस्तु या ज्ञान के बिना किसी आरोप का समर्थन करती है। इसके पास किसी प्रकार का प्रमाण या वैध ज्ञान नहीं है, जो इसे सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित कर सके।

आयत 60:

आयत का अनुवाद: "और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी (लगी रहेगी) देख क़ौमे आद ने अपने परवरदिगार का इन्कार किया देखो हूद की क़ौमे आद (हमारी बारगाह से) धुत्कारी पड़ी है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  क़ौमे आद को उनकी नाफ़रमानी के कारण इस दुनिया में भी लानत मिली और क़यामत के दिन भी उन्हें सज़ा दी जाएगी।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत क़ौमे आद के खिलाफ एक ठोस निंदा प्रस्तुत करती है, और यह दावा करती है कि उनकी नाफ़रमानी के कारण उन्हें दंड मिलेगा। हालांकि, "Hetu" (Reason) के सिद्धांत के अनुसार, कोई भी परिणाम या दंड तभी उचित होता है जब वह उचित तर्क या कारण से समर्थित हो। इस आयत में यह स्पष्ट नहीं किया गया कि क़ौमे आद के अपराधों के खिलाफ कौन सा तर्क दिया गया है, जिससे यह दंड उचित हो।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  यह आयत "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार अधूरा है, क्योंकि इसमें अपराधों और दंड के बीच कनेक्शन की स्पष्ट व्याख्या नहीं की गई है। इस प्रकार, इसे पूरी तरह से प्रमाणित करना कठिन है।

In conclusion, these Ayats, although they convey moral and theological lessons, present philosophical challenges when viewed from the Nyaya Darshan perspective. Many of the claims are based on unverified assumptions, incomplete reasoning, and lack of adequate pramana.

आयत 61:

आयत का अनुवाद: "और (हमने) क़ौमे समूद के पास उनके भाई सालेह को (पैग़म्बर बनाकर भेजा) तो उन्होंने (अपनी क़ौम से) कहा ऐ मेरी क़ौम ख़ुदा ही की परसतिश करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं उसी ने तुमको ज़मीन (की मिट्टी) से पैदा किया और तुमको उसमें बसाया तो उससे मग़फिरत की दुआ माँगों फिर उसकी बारगाह में तौबा करो (बेशक मेरा परवरदिगार (हर शख़्स के) क़रीब और सबकी सुनता और दुआ कुबूल करता है)।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  सालेह ने अपनी क़ौम को ख़ुदा की परसतिश करने, तौबा करने और मग़फिरत की दुआ माँगने की

सलाह दी। उन्होंने यह बताया कि उनका परवरदिगार क़रीब है और सबकी दुआ कुबूल करता है।

- **हेतु (Reasoning):**
 इस आयत में "Prameya" (वस्तु का ज्ञान) का उपयोग किया गया है, जहां सालेह अपनी क़ौम को एक सामान्य धार्मिक और आध्यात्मिक विचार पर समझा रहे हैं। उन्होंने यह दावा किया कि ख़ुदा क़रीब है और हर किसी की दुआ कुबूल करता है, लेकिन इस दावे का कोई ठोस प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया।
    - **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
     "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, कोई भी ज्ञान तभी सत्य माना जाता है जब वह सत्यापन योग्य हो। इस आयत में ख़ुदा की क़रीबी और दुआ कुबूल करने की बात की जा रही है, लेकिन इसका सत्यापन और कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 यह आयत केवल विश्वास और विश्वास की बात करती है, लेकिन "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, इसे सत्य नहीं माना जा सकता क्योंकि इसे प्रमाणित करने के लिए कोई ठोस या अनुभवजन्य जानकारी नहीं दी गई है। इसे व्यक्तिगत आस्था पर आधारित माना जा सकता है, लेकिन यह सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकता।

आयत 62:

आयत का अनुवाद: "वह लोग कहने लगे ऐ सालेह इसके पहले तो तुमसे हमारी उम्मीदें वाबस्ता थीं तो क्या अब तुम जिस चीज़ की परसतिश हमारे बाप दादा करते थे उसकी परसतिश से हमें रोकते हो और जिस दीन की तरफ तुम हमें बुलाते हो हम तो उसकी निस्बत ऐसे शक में पड़े हैं कि उसने हैरत में डाल दिया है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 क़ौमे समूद के लोग सालेह से कहते हैं कि पहले वे उनकी बातों से उम्मीद रखते थे, लेकिन अब जब वे पुराने धार्मिक रीति-रिवाजों को छोड़कर नए धर्म की ओर बुला रहे हैं, तो वे शंका में हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  इस आयत में क़ौमे समूद का तर्क "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार पर आधारित है। वे पूछते हैं कि अब सालेह के धर्म की ओर जाने का क्या कारण है, जबकि पहले वे पुराने धर्म में विश्वास रखते थे। यहाँ पर यह प्रश्न उठाया जा रहा है कि पुराने विश्वासों को छोड़कर नया विश्वास क्यों अपनाया गया। हालांकि, "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, कोई भी तर्क सही माना जाता है जब वह पूरी तरह से उचित और प्रमाणित हो। क़ौमे समूद का तर्क यह नहीं दिखाता कि पुराने विश्वास पूरी तरह से सही थे, बल्कि वे अपने वर्तमान विश्वासों में शंका व्यक्त कर रहे हैं।
    - **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
      इस आयत में यह न दर्शाया गया है कि पुराना विश्वास सत्य था या गलत, बल्कि यह केवल शंका और भ्रम का विषय है। इस संदर्भ में, यह तर्क (Hetu) के सिद्धांत के अनुसार अधूरा है, क्योंकि इसमें प्रमाण या सत्य का समर्थन नहीं है।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  क़ौमे समूद का यह तर्क कमजोर है क्योंकि यह बिना उचित प्रमाण और पुष्टि के पुराने विश्वासों की ओर इशारा करता है और नए विश्वासों की ओर शंका व्यक्त करता है। "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, बिना किसी वास्तविक तर्क के इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयत 63:

आयत का अनुवाद: "सालेह ने जवाब दिया ऐ मेरी क़ौम भला देखो तो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हूँ और उसने मुझे अपनी (बारगाह) मे रहमत (नबूवत) अता की है इस पर भी अगर मै उसकी नाफ़रमानी करुँ तो ख़ुदा (के अज़ाब से बचाने में) मेरी मदद कौन करेगा-फिर तुम सिवा नुक़सान के मेरा कुछ बढ़ा दोगे नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  सालेह का कहना है कि यदि वे ख़ुदा के आदेशों का पालन करते हैं, तो उन्हें मदद और मार्गदर्शन मिलेगा, लेकिन यदि वे नाफ़रमानी करते हैं, तो उन्हें कोई मदद नहीं मिलेगी, और केवल नुकसान होगा।

- **हेतु (Reasoning):**
  इस आयत में सालेह ने यह तर्क दिया कि यदि वे ख़ुदा के आदेशों का पालन करते हैं, तो वे सुरक्षित रहेंगे, और अगर नाफ़रमानी करते हैं तो नुकसान होगा। यह तर्क "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार उचित है, क्योंकि यहाँ कारण (ख़ुदा की मदद) और परिणाम (सुरक्षा या नुकसान) के बीच सीधा संबंध है।

  - **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
    "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यह तर्क सही और सुसंगत है, क्योंकि कारण (ख़ुदा का आदेश) और परिणाम (सुरक्षा या नुकसान) के बीच स्पष्ट संबंध है।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  यह आयत "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार उचित और तार्किक है, क्योंकि इसमें कारण और परिणाम के बीच एक स्पष्ट और सुसंगत संबंध स्थापित किया गया है। यह तर्क धर्म के पालन और नाफ़रमानी के परिणामों के बारे में स्पष्टता प्रदान करता है।

आयत 64:

आयत का अनुवाद: "ऐ मेरी क़ौम ये ख़ुदा की (भेजी हुयी) ऊँटनी है तुम्हारे वास्ते (मेरी नबूवत का) एक मौजिज़ा है तो इसको (उसके हाल पर) छोड़ दो कि ख़ुदा की ज़मीन में (जहाँ चाहे) खाए और उसे कोई तकलीफ न पहुँचाओ (वरना) फिर तुम्हें फौरन ही (ख़ुदा का) अज़ाब ले डालेगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  सालेह अपनी क़ौम को चेतावनी देते हैं कि अगर वे ख़ुदा की भेजी ऊंटनी को नुकसान पहुँचाते हैं तो उन्हें ख़ुदा का अज़ाब मिलेगा।

- **हेतु (Reasoning):**
  इस आयत में "Vyapti" का सिद्धांत लागू किया गया है, जिसमें कहा जा रहा है कि यदि ऊंटनी को कोई नुकसान पहुँचाया जाता है, तो इसके परिणामस्वरूप अज़ाब होगा। यह एक निश्चित परिणाम की बात करता है, जो सभी परिस्थितियों में लागू नहीं हो सकता।

- ○ **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, किसी कारण और परिणाम के बीच निरंतरता और सुसंगतता होनी चाहिए। इस आयत में यह दावा किया जा रहा है कि अगर ऊंटनी को नुकसान पहुँचाया गया, तो अज़ाब मिलेगा। हालांकि, यह दावा हर बार सही साबित नहीं हो सकता, क्योंकि यह एक निश्चित कारण-परिणाम संबंध को स्थापित करता है जो सभी परिस्थितियों में लागू नहीं हो सकता।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार सही नहीं है, क्योंकि यह एक निश्चित और निरंतर परिणाम का दावा करती है, जो सभी मामलों में लागू नहीं हो सकता। इसके कारण यह तर्क कमजोर और अधूरा है।

आयत 65:

आयत का अनुवाद: "(वरना) फिर तुम्हें फौरन ही (ख़ुदा का) अज़ाब ले डालेगा इस पर भी उन लोगों ने उसकी कूँचे काटकर (मार) डाला तब सालेह ने कहा अच्छा तीन दिन तक (और) अपने अपने घर में चैन (उड़ा लो)।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  सालेह ने अपनी क़ौम को चेतावनी दी कि यदि वे ऊंटनी को नुकसान पहुँचाते हैं, तो उन्हें अज़ाब का सामना करना पड़ेगा। जब उन्होंने ऐसा किया, तो सालेह ने तीन दिन का समय दिया।

- **हेतु (Reasoning):**
  यह आयत "Vyapti" (निरंतर सहवर्ती) सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह दावा करती है कि अगर ऊंटनी को नुकसान पहुँचाया गया, तो अज़ाब तय है। हालांकि, "Vyapti" के अनुसार, यह निश्चित नहीं है कि हर बार ऐसा परिणाम होगा।

आयत 66:

आयत का अनुवाद: "यही ख़ुदा का वादा है जो कभी झूठा नहीं होता फिर जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो हमने सालेह और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी मेहरबानी से नजात दी और उस दिन की रुसवाई से बचा लिया इसमें शक नहीं कि तेरा परवरदिगार ज़बरदस्त ग़ालिब है।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत ख़ुदा के वादे की सत्यता पर आधारित है, जिसमें कहा गया है कि ख़ुदा का वादा कभी झूठा नहीं होता और उसका अज़ाब समय पर आता है। सालेह और उसके अनुयायियों को ख़ुदा की मेहरबानी से बचाया गया और उनके साथ रुसवाई नहीं हुई।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Pramana" (वैध ज्ञान) के सिद्धांत के अनुसार, इस आयत में एक दावा किया गया है कि ख़ुदा का वादा कभी झूठा नहीं होता। हालांकि, यह दावा विश्वास और धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है और इसका कोई ठोस भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया।

  - **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
    "Pramana" के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी ज्ञान को सत्य माना जाता है जब वह प्रमाणित और अनुभवजन्य हो। इस आयत में कोई भौतिक प्रमाण नहीं दिया गया है, बल्कि यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है। इसलिए, इसे सार्वभौमिक सत्य नहीं माना जा सकता।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत का दावा "Pramana" के सिद्धांत के अनुसार संदेहास्पद है क्योंकि इसे केवल विश्वास और आस्था पर आधारित माना जा सकता है, न कि सत्यापन योग्य प्रमाण पर। इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयत 67:

आयत का अनुवाद: "और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उनको एक सख़्त चिघाड़ ने ले डाला तो वह लोग अपने अपने घरों में औंधें पड़े रह गये।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में यह दावा किया जा रहा है कि जो लोग ज़ुल्म करते हैं, उन्हें एक सख़्त चिघाड़ (आवाज़) से सजा दी जाती है और वे अपने घरों में औंधे पड़े रहते हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" (निरंतर सहवर्ती) के सिद्धांत के अनुसार, इस आयत में यह दावा किया गया है कि ज़ुल्म करने वालों को हमेशा सख़्त चिघाड़ से सजा मिलती है। हालांकि, "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी कारण और परिणाम के बीच निरंतर और सुसंगत संबंध होना चाहिए। यह दावा सार्वभौमिक नहीं हो सकता, क्योंकि सभी ज़ुल्म करने वालों को हमेशा सख़्त चिघाड़ से सजा नहीं मिलती।

  - **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
    इस आयत में "Vyapti" का उल्लंघन हो रहा है क्योंकि यह एक निश्चित और निरंतर परिणाम की बात करती है, जो सभी मामलों में लागू नहीं हो सकता।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  यह आयत "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार सुसंगत नहीं है, क्योंकि यह दावा करती है कि हर बार ज़ुल्म करने वालों को सख़्त चिघाड़ से सजा मिलती है, जो सभी मामलों में सत्य नहीं हो सकता।

आयत 68:

आयत का अनुवाद: "और ऐसे मर मिटे कि गोया उनमें कभी बसे ही न थे तो देखो क़ौमे समूद ने अपने परवरदिगार की नाफरमानी की और (सज़ा दी गई) सुन रखो कि क़ौमे समूद (उसकी बारगाह से) धुत्कारी हुई है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में यह दावा किया गया है कि क़ौमे समूद को उनके परवरदिगार की नाफ़रमानी की वजह से सज़ा दी गई, और वे पूरी तरह से नष्ट हो गए।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, नाफ़रमानी का परिणाम हमेशा सजा होना चाहिए, जैसा कि इस आयत में कहा गया है। हालांकि, यह तर्क सार्वभौमिक नहीं हो सकता, क्योंकि यह सिर्फ एक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई प्रमाण नहीं है।

    - **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
     "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, कोई भी तर्क तभी सही माना जाता है जब उसके कारण और परिणाम के बीच स्पष्ट और सुसंगत संबंध हो। यहाँ पर सज़ा का कारण नाफ़रमानी है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं प्रस्तुत किया गया।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार तर्क अधूरा है क्योंकि इसमें कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया कि नाफ़रमानी का परिणाम हमेशा सजा होगा। इसे केवल धार्मिक विश्वास माना जा सकता है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकता।

आयत 69:

आयत का अनुवाद: "और हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) इबराहीम के पास ख़ुशख़बरी लेकर आए और उन्होंने (इबराहीम को) सलाम किया (इबराहीम ने) सलाम का जवाब दिया फिर इबराहीम एक बछड़े का भुना हुआ (गोष्त) ले आए।"

चुना गया न्याय तत्व: Upamana (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में फरिश्तों ने इबराहीम को ख़ुशख़बरी दी और इबराहीम ने उन्हें सलाम का जवाब दिया, फिर एक बछड़े का भुना हुआ गोश्त पेश किया।

- **हेतु (Reasoning):**
 यहाँ "Upamana" (तुलना) का उपयोग किया गया है, क्योंकि यह दृश्य एक सामान्य मानवीय आचार विचार से तुलना करता है। इस आयत में यह दिखाया जा रहा है कि इबराहीम ने अपने मेहमानों के साथ उसी प्रकार आचरण किया जैसे एक सामान्य इंसान करता है। हालांकि, इसका कोई तात्त्विक या तार्किक मूल्य नहीं है, क्योंकि यह केवल धार्मिक रिवाजों का पालन करने की एक कहानी है।

    - **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
     "Upamana" के सिद्धांत के अनुसार, यदि हम किसी अन्य व्यक्ति के साथ किसी वस्तु या स्थिति की तुलना करते हैं, तो हमें एक समानता स्थापित करनी चाहिए। यह आयत सिर्फ धार्मिक रूप से एक सामान्य व्यवहार को दिखा रही है, जिसका तार्किक मूल्य बहुत सीमित है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 यह आयत "Upamana" के सिद्धांत के अनुसार एक सामान्य तुलना का उदाहरण है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या तार्किक आधार नहीं है। इसे एक सांस्कृतिक या धार्मिक संदर्भ में समझा जा सकता है, लेकिन यह सार्वभौमिक सत्य नहीं है।

आयत 70:

आयत का अनुवाद: "(और साथ खाने बैठें) फिर जब देखा कि उनके हाथ उसकी तरफ नहीं बढ़ते तो उनकी तरफ से बदगुमान हुए और जी ही जी में डर गए (उसको वह फरिश्ते समझे) और कहने लगे आप डरे नहीं हम तो क़ौम लूत की तरफ (उनकी सज़ा के लिए) भेजे गए हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में फरिश्ते इबराहीम के पास जाते हैं, लेकिन जब वे देखते हैं कि इबराहीम उनसे भोजन की उम्मीद नहीं करते, तो वे उन्हें आश्वस्त करते हैं कि वे डरने की कोई बात नहीं है, क्योंकि वे क़ौम लूत की सज़ा के लिए भेजे गए हैं।
- **हेतु (Reasoning):**
 इस आयत में "Vyapti" का सिद्धांत लागू किया जा सकता है, क्योंकि यह दर्शाया गया है कि यदि

कोई व्यक्ति भोजन नहीं लेता, तो वह डर के कारण ऐसा करता है। लेकिन यह तर्क हर स्थिति में लागू नहीं हो सकता क्योंकि यह एक निश्चित प्रकार की स्थिति (फरिश्तों के आने) पर आधारित है।

आयत 71:

आयत का अनुवाद: "और इबराहीम की बीबी (सायरा) खड़ी हुयी थी वह (ये ख़बर सुनकर) हॅस पड़ी तो हमने (उन्हें फरिशतों के ज़रिए से) इसहाक़ के पैदा होने की खुशख़बरी दी और इसहाक़ के बाद याक़ूब की।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह दावा किया जा रहा है कि इबराहीम की पत्नी ने फरिश्तों के संदेश से इसहाक़ और फिर याक़ूब के जन्म की खुशख़बरी सुनी, जो एक अत्यंत चमत्कारी घटना है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, यह आयत दावा करती है कि फरिश्तों का संदेश और उनके द्वारा दी गई खुशख़बरी एक विशिष्ट कारण से संबंधित है। इस प्रकार, यह घटना एक चमत्कारी कारण से घटित होती है।
  हालांकि, इस तर्क को "Hetu" के दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह सुसंगत नहीं है, क्योंकि इस घटना का कोई भौतिक या वैज्ञानिक कारण नहीं दिया गया है। सिर्फ धार्मिक आस्था और विश्वास पर आधारित है।

  - **पदार्थ से तुलना (Comparison with Nyaya Elements):**
    "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, एक कारण और परिणाम के बीच में वास्तविक और स्पष्ट संबंध होना चाहिए। यहाँ पर एक चमत्कारी घटना का दावा किया गया है, लेकिन उसका कोई वैज्ञानिक या प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत का दावा "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार संदेहास्पद है, क्योंकि यह बिना किसी ठोस प्रमाण या कारण के एक चमत्कारी घटना का उल्लेख करती है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयत 72:

आयत का अनुवाद: "वह कहने लगी ऐ है क्या अब मै बच्चा जनने बैठूँगी मैं तो बुढ़िया हूँ और ये मेरे मियाँ भी बूढ़े है ये तो एक बड़ी ताज्जुब खेज़ बात है।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में इबराहीम की पत्नी सायरा यह प्रश्न करती हैं कि वे बूढ़ी हो चुकी हैं और उनका पति भी वृद्ध है, तो क्या अब वे बच्चे का जन्म दे सकती हैं। यह एक ताज्जुब खेज़ स्थिति है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत के अनुसार, सायरा की स्थिति का विश्लेषण करना आवश्यक है, जिसमें शारीरिक उम्र और प्राकृतिक सिद्धांतों के आधार पर यह स्थिति तर्कसंगत नहीं लगती। उम्र और शारीरिक स्थिति के कारण, प्राकृतिक रूप से इस अवस्था में संतान प्राप्ति में कठिनाई हो सकती है।
  इस आयत में यह स्थिति का तात्त्विक मूल्यांकन किया गया है, और यह एक तर्कपूर्ण दृष्टिकोण से अप्रमाणित है क्योंकि कोई वैज्ञानिक या प्राकृतिक कारण नहीं दिखाया गया कि इस उम्र में संतान का जन्म कैसे संभव हो सकता है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, तर्कसंगत आधार की कमी है क्योंकि सायरा की शारीरिक स्थिति और प्राकृतिक रूप से यह स्थिति अप्राकृतिक प्रतीत होती है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे तात्त्विक रूप से सही ठहराना कठिन है।

आयत 73:

आयत का अनुवाद: "वह फरिश्ते बोले (हाए) तुम ख़ुदा की कुदरत से तअज्जुब करती हो ऐ एहले बैत (नबूवत) तुम पर ख़ुदा की रहमत और उसकी बरकते (नाज़िल हो) इसमें शक नहीं कि वह क़ाबिल हम्द (वासना) बुज़ुर्ग हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में फरिश्ते सायरा को यह बताते हैं कि उनकी ताज्जुब करने की कोई बात नहीं है, क्योंकि यह ख़ुदा की कुदरत से संभव है। वे यह बताते हैं कि भगवान की रहमत और बरकत से यह संभव है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" (निरंतर सहवर्ती) के सिद्धांत के अनुसार, एक घटना और उसके परिणाम के बीच निरंतर और सुसंगत संबंध होना चाहिए। यहाँ पर यह बताया जा रहा है कि चमत्कारी घटनाएं हमेशा ख़ुदा की कुदरत और रहमत से होती हैं, लेकिन इस दावे का कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से लागू करना संभव नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार तर्क सही नहीं है, क्योंकि यह बिना किसी प्रमाण के यह दावा करती है कि ख़ुदा की कुदरत से चमत्कारी घटनाएं संभव हैं। यह केवल विश्वास पर आधारित है, न कि वास्तविकता या प्रमाण पर।

आयत 74:

आयत का अनुवाद: "फिर जब इबराहीम (के दिल) से ख़ौफ जाता रहा और उनके पास (औलाद की) खुशख़बरी भी आ चुकी तो हम से क़ौमे लूत के बारे में झगड़ने लगे।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि इबराहीम ने ख़ौफ की स्थिति से बाहर आने के बाद, क़ौमे लूत के बारे में ख़ुदा से बहस शुरू की।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यदि कोई घटना घटित होती है, तो उसके पीछे एक स्पष्ट और

सुसंगत कारण होना चाहिए। यहाँ इबराहीम का बहस करना क़ौमे लूत के बारे में एक भावनात्मक प्रतिक्रिया प्रतीत होता है, जो अति-व्यक्तिगत दृष्टिकोण से उत्पन्न हुआ है, न कि किसी ठोस तर्क या कारण से।
इसलिए, यह घटना "Hetu" के सिद्धांत के तहत पूरी तरह से तर्कसंगत नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, इबराहीम का क़ौमे लूत के बारे में बहस करना पूरी तरह से तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि यह एक व्यक्तिगत और भावनात्मक प्रतिक्रिया अधिक प्रतीत होती है।

आयत 75:

आयत का अनुवाद: "बेशक इबराहीम बुर्दबार नरम दिल (हर बात में ख़ुदा की तरफ) रुजू (ध्यान) करने वाले थे।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में इबराहीम की शख्सियत का वर्णन किया गया है, उन्हें नरम दिल और हर बात में ख़ुदा की तरफ ध्यान करने वाला व्यक्ति बताया गया है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, किसी व्यक्ति की विशेषताओं का विश्लेषण किया जा सकता है, लेकिन यह आयत केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से इबराहीम के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती है, और इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।
  यह केवल धार्मिक विचारों पर आधारित है, न कि किसी अनुभवजन्य प्रमाण पर।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत का वर्णन "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार तात्त्विक नहीं है, क्योंकि यह केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण है और इसमें कोई ठोस प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयत 76:

आयत का अनुवाद: "(हमने कहा) ऐ इबराहीम इस बात में हट मत करो (इस बार में) जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार का था वह क़तअन आ चुका और इसमें शक नहीं कि उन पर ऐसा अज़ाब आने वाले वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि इबराहीम से कहा गया कि अब कोई संदेह न करें, क़ौमे लूत पर शास्त्र का हुक्म आ चुका है और उन पर अज़ाब आना तय है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Hetu" (कारण) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि अल्लाह के आदेश के कारण क़ौमे लूत पर अज़ाब आना तय है, और यह नकारा नहीं जा सकता। लेकिन इस तर्क में यह अस्पष्ट है कि यह आदेश क्यों और किस कारण से दिया गया।
  धार्मिक दृष्टिकोण से यह दावा किया जाता है कि यह परमेश्वर की इच्छा है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार तर्क में कोई प्रमाण या व्याख्या नहीं है कि अज़ाब क्यों और किस कारण से आ रहा है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 77:

आयत का अनुवाद: "जो हमारे भेजे हुए फरिश्ते (लड़कों की सूरत में) लूत के पास आए तो उनके ख़्याल से रजीदा हुए और उनके आने से तंग दिल हो गए और कहने लगे कि ये (आज का दिन) सख़्त मुसीबत का दिन है।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत में यह बताया गया है कि फरिश्ते लूत के पास आए, और लूत के मन में डर और चिंता उत्पन्न हुई, क्योंकि उन्हें आभास हुआ कि यह एक मुसीबत का दिन है।
- **हेतु (Reasoning):**
  "Prameya" (ज्ञान का वस्तु) के सिद्धांत के अनुसार, यह घटना और लूत का डर तात्त्विक रूप से अप्राकृतिक है। फरिश्ते किसी अन्य रूप में आकर लूत को संकट से बचाने आए थे, फिर भी लूत को डर महसूस हुआ। यह भौतिक या वास्तविक कारण से जुड़ा नहीं है, बल्कि इसे एक धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है।

  इस पर आलोचना की जा सकती है कि लूत का डर बिना किसी वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार के व्यक्त हुआ है। धार्मिक संदर्भ में यह मामला केवल विश्वास पर आधारित है, न कि किसी प्रामाणिक ज्ञान या प्रमाण पर।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  "Prameya" के सिद्धांत से, यह आयत तात्त्विक रूप से अस्पष्ट है, क्योंकि यह केवल लूत की भावनाओं का वर्णन करती है, जो बिना किसी ठोस कारण के उत्पन्न होती हैं। इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

आयत 78:

आयत का अनुवाद: "और उनकी क़ौम (लड़कों की आवाज़ सुनकर बुरे इरादे से) उनके पास दौड़ती हुयी आई और ये लोग उसके क़ब्ल भी बुरे काम किया करते थे लूत ने (जब उनको) आते देखा तो कहा ऐ मेरी क़ौम ये हमारी क़ौम की बेटियाँ (मौजूद हैं) उनसे निकाह कर लो ये तुम्हारी वास्ते जायज़ और ज़्यादा साफ सुथरी हैं तो ख़ुदा से डरो और मुझे मेरे मेहमान के बारे में रुसवा न करो क्या तुम में से कोई भी समझदार आदमी नहीं है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  लूत अपनी क़ौम को यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि उनकी बेटियाँ उनसे शादी करने के लिए उपलब्ध हैं, और इस तरीके से वे अपने बुरे कामों को छोड़ सकते हैं। यह बताने का प्रयास किया

गया है कि यह तरीका अधिक उचित और साफ-सुथरा है।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Vyapti" (निरंतर सहवर्ती) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि लूत के समाज के बुरे कामों को केवल उनके बेटियों से विवाह के प्रस्ताव से रोका जा सकता है।
 हालांकि, यह तर्क न केवल निराधार है, बल्कि यह समाज की समझ को भी गलत तरीके से प्रस्तुत करता है। किसी भी बुरे कार्य को केवल शादी के माध्यम से सुधारने का दावा एक अव्यवस्थित और अवास्तविक समाधान है।
 इस प्रकार, यह तर्क "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार प्रामाणिक नहीं है, क्योंकि कोई निरंतर और प्रमाणित संबंध नहीं है जो बुरे कार्यों को सही करने के लिए शादी के प्रस्ताव से जुड़ा हो।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, बुरे कार्यों को समाप्त करने के लिए जो समाधान प्रस्तुत किया गया है, वह तार्किक रूप से अव्यवस्थित और अवास्तविक है। यह समाधान एक अव्यक्त और निराधार दावा है।

आयत 79:

आयत का अनुवाद: "उन (कम्बख़्तो) न जवाब दिया तुम को खूब मालूम है कि तुम्हारी क़ौम की लड़कियों की हमें कुछ हाजत (जरूरत) नही है और जो बात हम चाहते है वह तो तुम ख़ूब जानते हो।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Source of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत क़ौमे लूत के लोगों के जवाब का वर्णन करती है, जिसमें वे लूत के प्रस्ताव को ठुकराते हैं और कहते हैं कि उन्हें उनकी बेटियाँ नहीं चाहिए, बल्कि वे जो चाहते हैं, वह स्पष्ट रूप से लूत जानते हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Pramana" (ज्ञान का स्रोत) के सिद्धांत के अनुसार, यह आयत इन व्यक्तियों के वास्तविक इरादे का वर्णन करती है, जो बिना किसी अन्य प्रमाण के अपने उद्देश्य को स्पष्ट रूप से लूत से व्यक्त करते हैं।

हालांकि, यह प्रतिक्रिया स्पष्ट रूप से उनके बुरे इरादों को उजागर करती है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं दिखाया गया है कि उनके इरादे कितने सुसंगत या सही थे। यह केवल उनके विचारों और इच्छाओं का वर्णन है, जो वास्तविक ज्ञान से परे हैं।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Pramana" के सिद्धांत के अनुसार, क़ौमे लूत के लोगों के विचारों का कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं है। यह केवल उनके इच्छाओं का वर्णन है, जिसे किसी ठोस प्रमाण या वास्तविकता से नहीं जोड़ा जा सकता।

आयत 80:

आयत का अनुवाद: "लूत ने कहा काश मुझमें तुम्हारे मुक़ाबले की कूवत होती या मै किसी मज़बूत क़िले मे पनाह ले सकता।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  लूत इस आयत में कहते हैं कि अगर उनके पास ताकत होती, तो वे अपनी क़ौम को रोका सकते थे, लेकिन अब उनका सामना उस स्थिति से नहीं कर पा रहे हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यह तर्क कि लूत के पास ताकत नहीं है, यह एक व्यक्तिगत अहंकार और असमर्थता का संकेत है। लेकिन इसका कोई तार्किक कारण नहीं दिखाया गया कि क्यों लूत अपने क़ौम को रोकने में सक्षम नहीं थे। यह एक भावनात्मक प्रतिक्रिया है, न कि किसी ठोस तर्क या कारण पर आधारित।
  इसलिए, यह आयत "Hetu" के दृष्टिकोण से पूरी तरह तात्त्विक नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, लूत का असमर्थता का एहसास तात्त्विक रूप से अस्पष्ट है और यह केवल एक व्यक्तिगत और भावनात्मक प्रतिक्रिया प्रतीत होती है, न कि कोई ठोस

और प्रमाणित कारण।

आयत 81:

आयत का अनुवाद: "वह फरिश्ते बोले ऐ लूत हम तुम्हारे परवरदिगार के भेजे हुए (फरिश्ते हैं तुम घबराओ नहीं) ये लोग तुम तक हरगिज़ (नहीं पहुँच सकते तो तुम कुछ रात रहे अपने लड़कों बालों समैत निकल भागो और तुममें से कोई इधर मुड़ कर भी न देखे मगर तुम्हारी बीबी कि उस पर भी यक़ीनन वह अज़ाब नाज़िल होने वाला है जो उन लोगों पर नाज़िल होगा और उन (के अज़ाब का) वादा बस सुबह है क्या सुबह क़रीब नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में फरिश्तों का लूत से संवाद है, जिसमें उन्हें अज़ाब से बचने का आदेश दिया जा रहा है और बताया जा रहा है कि उनका बीवी सहित अज़ाब में शामिल होगा, जबकि वह लोग जो पापी थे, अज़ाब से बच नहीं सकते।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" (निरंतर सहवर्ती) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि जिन लोगों ने पाप किए थे, उन पर क़यामत का अज़ाब आना तय है। और यह अज़ाब सुबह के समय आने वाला था। यह तर्क लगातार सिद्धांत के अनुसार प्रस्तुत किया गया है कि पापी इस दंड से बच नहीं सकते। हालांकि, यह बिना किसी वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित एक दावा है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह एक बेमानी दावा प्रतीत होता है, क्योंकि दंड और अज़ाब को किसी प्राकृतिक या भौतिक कारण से नहीं जोड़ा गया है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  "Vyapti" के सिद्धांत से, यह आयत एक धार्मिक तर्क प्रस्तुत करती है, जिसमें अज़ाब को पाप और दुष्कर्मों के परिणाम के रूप में दिखाया गया है। हालांकि, इसका कोई प्रामाणिक वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 82:

आयत का अनुवाद: "फिर जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो हमने (बस्ती की ज़मीन के तबके) उलट कर उसके ऊपर के हिस्से को नीचे का बना दिया और उस पर हमने खरन्जेदार पत्थर ताबड़ तोड़ बरसाए।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत बताती है कि जब अल्लाह का आदेश आ गया, तो उसने बस्ती को उलट दिया और उसके ऊपर पत्थर बरसाए।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यह घटना एक कारण-परिणाम संबंध पर आधारित है, जहां बस्ती की बुराई के कारण अल्लाह ने उसे सजा दी। लेकिन यह कारण-परिणाम का संबंध बिना किसी तात्त्विक या वैज्ञानिक विवरण के प्रस्तुत किया गया है। पत्थरों का बरसना और बस्ती का उलटना केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से समझाया गया है, जिसका कोई भौतिक या प्राकृतिक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, पत्थरों का बरसना और बस्ती का उलटना अल्लाह के आदेश के अनुसार था, लेकिन इसका कोई ठोस और प्रमाणिक कारण नहीं दिया गया है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य हो।

आयत 83:

आयत का अनुवाद: "जिन पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से निशा न बनाए हुए थे और वह बस्ती (उन) ज़ालिमों (कुफ़्फ़ारे मक्का) से कुछ दूर नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Source of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि बस्ती पर पत्थरों का प्रहार किया गया, और यह भी बताया गया कि

ये पत्थर अल्लाह के आदेश के अनुसार थे।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Pramana" (ज्ञान का स्रोत) के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि पत्थरों का प्रहार अल्लाह के आदेश से था, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं दिखाया गया है कि यह घटना भौतिक रूप से प्रमाणित है। यह केवल धार्मिक विश्वास के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Pramana" के सिद्धांत के अनुसार, इसका ज्ञान केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई ठोस भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 84:

आयत का अनुवाद: "और हमने मदयन वालों के पास उनके भाई शोएब को पैग़म्बर बना कर भेजा उन्होंने (अपनी क़ौम से) कहा ऐ मेरी क़ौम ख़ुदा की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं और नाप और तौल में कोई कमी न किया करो मै तो तुम को आसूदगी (ख़ुशहाली) में देख रहा हूँ (फिर घटाने की क्या ज़रुरत है) और मै तो तुम पर उस दिन के अज़ाब से डराता हूँ जो (सबको) घेर लेगा।"

चुना गया न्याय तत्व: **Prameya (Object of Knowledge)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  शोएब अपनी क़ौम को एक अच्छा और न्यायपूर्ण जीवन जीने की सलाह दे रहे हैं और उन्हें चेतावनी दे रहे हैं कि यदि वे अपने कार्यों में इन्साफ नहीं करेंगे, तो वे अज़ाब के भागी होंगे।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि यदि लोग अपने कार्यों में इन्साफ से काम नहीं लेते, तो वे अज़ाब के पात्र बनेंगे। हालांकि, यह तात्त्विक रूप से अप्राकृतिक और अव्यवस्थित है, क्योंकि अज़ाब का संबंध केवल धार्मिक विश्वास से है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं दिया गया है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, अज़ाब को नाप-तौल की कमी से जोड़ा गया है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है, यह केवल धार्मिक विचारधारा पर आधारित है।

आयत 85:

आयत का अनुवाद: "और ऐ मेरी क़ौम पैमाने और तराज़ू इन्साफ़ के साथ पूरे पूरे रखा करो और लोगों को उनकी चीज़े कम न दिया करो और रुए ज़मीन में फसाद न फैलाते फिरो।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 शोएब अपनी क़ौम को न्यायपूर्ण तरीके से व्यापार करने और किसी को धोखा न देने का आदेश दे रहे हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि अगर लोग इन्साफ से काम करेंगे तो उन्हें कोई बुराई नहीं होगी, और यदि वे ऐसा नहीं करेंगे, तो उन्हें दंड मिलेगा। यह तर्क कुछ हद तक निरंतर और प्रमाणिक सिद्धांत पर आधारित है।
 हालांकि, इसके बावजूद यह पूरी तरह से धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, न कि किसी भौतिक या तात्त्विक प्रमाण के साथ।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Vyapti" के सिद्धांत से एक निरंतरता प्रस्तुत की जा रही है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या भौतिक आधार नहीं है। यह केवल धार्मिक नैतिकता और विश्वास पर आधारित है।

आयत 86:

आयत का अनुवाद: "गर तुम सच्चे मोमिन हो तो ख़ुदा का बक़िया तुम्हारे वास्ते कही अच्छा है और मैं तो कुछ तुम्हारा निगेहबान नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  शोएब ने अपनी क़ौम से कहा कि यदि वे सच्चे मोमिन हैं, तो उनका विश्वास और त्याग उनका अच्छा होगा, और यह सब कुछ अल्लाह के हाथ में है, जो न केवल न्यायपूर्ण है बल्कि मेहरबान भी है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि अल्लाह का फैसला और उसकी कृपा सच्चे मोमिनों के लिए सर्वोत्तम होगी। यह तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जहां अच्छाई और न्याय का अंतिम स्रोत अल्लाह को माना गया है। हालांकि, इस बयान का कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है, और यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Prameya" के सिद्धांत का प्रयोग किया गया है, जिसमें धर्म और विश्वास के आधार पर यह कहा गया है कि सच्चे मोमिनों के लिए अल्लाह का इनाम सर्वोत्तम होगा। इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं दिया गया, जो इसे एक बेमानी दावा बनाता है, यदि इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए।

आयत 87:

आयत का अनुवाद: "वह लोग कहने लगे ऐ शोएब क्या तुम्हारी नमाज़ (जिसे तुम पढ़ा करते हो) तुम्हें ये सिखाती है कि जिन (बुतों) की परसतिष हमारे बाप दादा करते आए उन्हें हम छोड़ बैठें या हम अपने मालों में जो कुछ चाहे कर बैठें तुम ही तो बस एक बुर्दबार और समझदार (रह गए) हो।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 क़ौम शोएब ने आपत्ति की है कि क्या उनकी नमाज़ और दुआ उन्हें अपने बुतों की पूजा छोड़ने और अपनी संपत्ति पर नियंत्रण छोड़ने की सलाह देती है।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, इस आयत में उन लोगों ने शोएब के व्यवहार को चुनौती दी है और दावा किया है कि उनकी नमाज़ ने उन्हें पुराने रीति-रिवाजों को छोड़ने के लिए प्रेरित किया है। यह एक कारण-परिणाम का संबंध दिखाता है, जहां शोएब की पूजा और धार्मिक आस्थाएं उनके विरोधियों के लिए अस्वीकृत हो जाती हैं।
 हालांकि, यह तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Hetu" के सिद्धांत के आधार पर, शोएब के धार्मिक कृत्यों का उनके समाज पर प्रभाव दिखाया गया है, लेकिन यह प्रभाव केवल विश्वास और धार्मिक मान्यताओं से जुड़ा हुआ है, जिसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

आयत 88:

आयत का अनुवाद: "शोएब ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर मै अपने परवरदिगार की तरफ से रौशन दलील पर हूँ और उसने मुझे (हलाल) रोज़ी खाने को दी है (तो मै भी तुम्हारी तरह हराम खाने लगूँ) और मै तो ये नहीं चाहता कि जिस काम से तुम को रोकूँ तुम्हारे बर ख़िलाफ (बदले) आप उसको करने लगूं मैं तो जहाँ तक मुझे बन पड़े इसलाह (भलाई) के सिवा (कुछ और) चाहता ही नहीं और मेरी ताईद तो ख़ुदा के सिवा और किसी से हो ही नहीं सकती इस पर मैने भरोसा कर लिया है और उसी की तरफ रुज़ू करता हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 शोएब अपनी क़ौम को यह समझा रहे हैं कि वे केवल ईश्वर के आदेश का पालन कर रहे हैं और जो कुछ भी वे कहते हैं वह ईश्वर के मार्गदर्शन से है। वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि वे भलाई और सुधार की

बात कर रहे हैं और इसके सिवा कुछ नहीं चाहते।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, शोएब का तर्क यह है कि वे किसी भी गलत कार्य या बुराई के लिए जिम्मेदार नहीं हैं, बल्कि वे सुधार की दिशा में काम कर रहे हैं। उनका विश्वास और उनकी धार्मिक आस्थाएँ उनके कर्मों की दिशा निर्धारित करती हैं। यह तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Prameya" के सिद्धांत का प्रयोग यह दर्शाने के लिए किया गया है कि शोएब के कार्य और आदेश केवल धार्मिक आस्थाओं से प्रेरित हैं। हालांकि, यह कोई भौतिक प्रमाण या तात्त्विक आधार प्रदान नहीं करता है, और केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

आयत 89:

आयत का अनुवाद: "और ऐ मेरी क़ौमे मेरी ज़िद कही तुम से ऐसा जुर्म न करा दे जैसे मुसीबत क़ौम नूह या हूद या सालेह पर नाज़िल हुयी थी वैसी ही मुसीबत तुम पर भी आ पड़े और लूत की क़ौम (का ज़माना) तो (कुछ ऐसा) तुमसे दूर नहीं (उन्हीं के इबरत हासिल करो।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  शोएब अपनी क़ौम से कह रहे हैं कि यदि वे सुधार की दिशा में नहीं बदलते, तो वे पहले की क़ौमों के समान विनाश का शिकार हो सकते हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, शोएब यह कह रहे हैं कि पाप और बुराई के कारण सज़ा निर्धारित होती है, जैसा पहले की क़ौमों के साथ हुआ था। यह एक निरंतरता दर्शाता है कि यदि वे गलत रास्ते पर चलते हैं, तो उन्हें भी वैसा ही परिणाम मिलेगा।
  हालांकि, यह तर्क भी धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक

प्रमाण नहीं दिया गया है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Vyapti" के सिद्धांत का प्रयोग किया गया है, जो यह दर्शाता है कि क़ौमों का विनाश उनके पापों के कारण हुआ। हालांकि, यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 90:

आयत का अनुवाद: "और अपने परवरदिगार से अपनी मग़फिरत की दुआ माँगों फिर उसी की बारगाह में तौबा करो बेशक मेरा परवरदिगार बड़ा मोहब्बत वाला मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 शोएब अपनी क़ौम को यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि अगर वे तौबा और मगफिरत के लिए अल्लाह की ओर रुजू करेंगे, तो अल्लाह उन्हें माफ करेगा और उन्हें मेहरबान रहेगा।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि तौबा और मगफिरत के जरिए अल्लाह की कृपा और मेहरबानी प्राप्त की जा सकती है। यह तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Hetu" के सिद्धांत का प्रयोग किया गया है, लेकिन यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 91:

आयत का अनुवाद: "और वह लोग कहने लगे ऐ शोएब जो बाते तुम कहते हो उनमें से अक्सर तो हमारी समझ ही में नहीं आयी और इसमें तो शक नहीं कि हम तुम्हें अपने लोगों में बहुत कमज़ोर समझते है और

अगर तुम्हारा क़बीला न होता तो हम तुम को (कब का) संगसार कर चुके होते और तुम तो हम पर किसी तरह ग़ालिब नहीं आ सकते।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  शोएब की क़ौम ने यह आरोप लगाया कि वे उनकी बातों को नहीं समझ पा रहे हैं और यह भी कहा कि अगर उनका क़बीला मददगार नहीं होता, तो वे उन्हें सजा दे चुके होते।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि शोएब की क़ौम का व्यवहार इस कारण था कि वे उन्हें कमजोर समझते थे। इस तर्क में यह कहा जा रहा है कि शोएब को उनके क़बीले की मदद के कारण ही सुरक्षा प्राप्त थी।
  हालांकि, यह तर्क पूरी तरह से सामाजिक और धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है, और इसमें कोई ठोस वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यह विचार किया गया है कि क़ौम की प्रतिक्रिया शोएब की स्थिति और उनके क़बीले के प्रभाव के आधार पर थी, जो एक सामाजिक परिपेक्ष्य से समझा जा सकता है। लेकिन यह तर्क भौतिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किसी प्रकार का साक्ष्य नहीं प्रस्तुत करता है।

आयत 92:

आयत का अनुवाद: "शोएब ने कहा ऐ मेरी क़ौम क्या मेरे कबीले का दबाव तुम पर ख़ुदा से भी बढ़ कर है (कि तुम को उसका ये ख़्याल) और ख़ुदा को तुम लोगों ने अपने वास्ते पीछे डाल दिया है बेशक मेरा परवरदिगार तुम्हारे सब आमाल पर अहाता किए हुए है।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  शोएब ने अपनी क़ौम से यह पूछा कि क्या उनके क़बीले का दबाव, अल्लाह के आदेश से अधिक प्रभावी है, और क्या वे यह मानते हैं कि अल्लाह उनके कार्यों से अनजान है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि अल्लाह उनके सभी कार्यों से अवगत है और उनका कोई भी कार्य उस पर छिपा नहीं है। यह तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है कि अल्लाह सर्वज्ञ है और उसके आदेश की शक्ति सब से ऊपर है।
  हालांकि, यह तर्क किसी वैज्ञानिक या भौतिक दृष्टिकोण से साक्ष्य नहीं प्रस्तुत करता है और केवल धार्मिक विश्वास के आधार पर है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Prameya" के सिद्धांत का प्रयोग किया गया है, जिसमें अल्लाह की सर्वज्ञता और उसकी सर्वोच्च शक्ति को माना गया है। लेकिन, यह दृष्टिकोण वैज्ञानिक या तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं है, क्योंकि यह धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है।

आयत 93:

आयत का अनुवाद: "और ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह (जो चाहो) करो मैं भी (बजाए खुद) कुछ करता हू अनक़रीब ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर अज़ाब नाज़िल होता है जा उसको (लोगों की नज़रों में) रुसवा कर देगा और (ये भी मालूम हो जाएगा कि) कौन झूठा है तुम भी मुन्तिज़र रहो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तेज़ार करता हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  शोएब अपनी क़ौम से कहते हैं कि वे जो चाहे करें, लेकिन अंत में उन्हें यह पता चलेगा कि कौन झूठा था और किस पर अज़ाब आना था।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि पाप और झूठ के परिणामस्वरूप

अल्लाह का अज़ाब निश्चित रूप से आएगा। यह एक निरंतर और अपरिवर्तनीय संबंध को दर्शाता है, जिसमें बुराई के परिणामस्वरूप दंड तय होता है।
हालांकि, यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई ठोस भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Vyapti" के सिद्धांत का प्रयोग किया गया है, लेकिन यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और भौतिक या तात्त्विक प्रमाण की कमी है।

आयत 94:

आयत का अनुवाद: "और जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो हमने शोऐब और उन लोगों को जो उसके साथ इमान लाए थे अपनी मेहरबानी से बचा लिया और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उनको एक चिंघाड़ ने ले डाला फिर तो वह सबके सब अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 जब अल्लाह का अज़ाब आया, तो शोएब और उसके अनुयायी बच गए, लेकिन जो लोग ज़ुल्म कर रहे थे, उन्हें अज़ाब का सामना करना पड़ा और वे मर गए।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि अज़ाब का कारण उन लोगों का पाप था, और उन पर दंड आया। इस तर्क में यह कहा गया है कि जिन्होंने बुराई की, उन्हें सजा मिली, जबकि सच्चे मोमिनों को बचा लिया गया।
 यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Hetu" के सिद्धांत के आधार पर, यह कहा जा रहा है कि अज़ाब का कारण बुराई और पाप था। हालांकि, इसे धार्मिक विश्वास और आस्थाओं पर आधारित किया गया है, और

इसका भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 95:

आयत का अनुवाद: "(और वह ऐसे मर मिटे) कि गोया उन बस्तियों में कभी बसे ही न थे सुन रखो कि जिस तरह समूद (ख़ुदा की बारगाह से) धुत्कारे गए उसी तरह एहले मदियन की भी धुत्कारी हुयी।"

चुना गया न्याय तत्व: **Vyapti (Invariable Concomitance)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत बताती है कि जो लोग बुराई और पाप में लिप्त थे, वे अल्लाह के अज़ाब से मर गए और वे लोग समूद की तरह धुत्कारे गए।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि पाप और बुराई के परिणामस्वरूप हमेशा दंड निश्चित होता है। यह एक निरंतर और अपरिवर्तनीय संबंध को दर्शाता है।
  हालांकि, यह भी धार्मिक विश्वास और आस्थाओं पर आधारित है, और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" के सिद्धांत का प्रयोग किया गया है, लेकिन यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और भौतिक या तात्त्विक प्रमाण की कमी है।

आयत 96:

आयत का अनुवाद: "और बेशक हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और रौशन दलील देकर फिरआउन और उसके अम्र (सरदारों) के पास (पैग़म्बर बना कर) भेजा तो लोगों ने फिरआउन ही का हुक्म मान लिया (और मूसा की एक न सुनी) हालांकि फिरआऊन का हुक्म कुछ जॅचा समझा हुआ न था।"

चुना गया न्याय तत्व: **Prameya (Object of Knowledge)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 मूसा को अल्लाह ने अपनी निशानियाँ और स्पष्ट दलील देकर फिरआउन और उसके सरदारों के पास भेजा, लेकिन लोगों ने फिरआउन का हुक्म मान लिया और मूसा की बात नहीं मानी, जबकि फिरआऊन का हुक्म उचित नहीं था।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि मूसा के पास अल्लाह की तरफ से स्पष्ट निशानियाँ और प्रमाण थे, लेकिन फिरआउन का आदेश न समझने के बावजूद लोग उसे मानते रहे। यह तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है कि अल्लाह ने मूसा को सही मार्गदर्शन दिया था, और फिरआउन का हुक्म भ्रमपूर्ण था।
 हालांकि, यह केवल एक धार्मिक परिपेक्ष्य में सही हो सकता है और इसका भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Prameya" का उपयोग किया गया है, जो मूसा की स्पष्ट निशानियों और फिरआउन के हुक्म की तुलना करता है। यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, लेकिन इसका कोई ठोस भौतिक प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयत 97:

आयत का अनुवाद: "क़यामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे आगे चलेगा और उनको दोज़ख़ में ले जाकर झोंक देगा और ये लोग किस क़दर बड़े घाट उतारे गए।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 क़यामत के दिन फिरआउन अपनी क़ौम के साथ दोज़ख़ में जाएगा, और ये लोग बुरे अंजाम से जूझेंगे।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि फिरआउन और उसकी क़ौम को उनके कर्मों के कारण दोज़ख़ का सामना करना पड़ेगा। इस तर्क में यह स्पष्ट किया गया है कि बुरे कर्मों के परिणामस्वरूप बुरा अंजाम होता है।
  हालांकि, यह तर्क केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या भौतिक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" का प्रयोग किया गया है, जहां बुरे कर्मों के लिए दोज़ख़ का परिणाम निश्चित किया गया है। यह धार्मिक आस्था का विषय है, लेकिन भौतिक या तात्त्विक दृष्टिकोण से इसका प्रमाण नहीं है।

आयत 98:

आयत का अनुवाद: "और (इस दुनिया) में भी लानत उनके पीछे पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी (लगी रहेगी) क्या बुरा इनाम है जो उन्हें मिला।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  फिरआउन और उसकी क़ौम के लिए न केवल इस दुनिया में बल्कि क़यामत के दिन भी लानत होगी।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि फिरआउन और उसकी क़ौम के लिए एक निश्चित परिणाम है, जो उनके कर्मों का परिणाम है। इस तर्क में यह कहा गया है कि उनकी बुराई के कारण उन्हें हमेशा के लिए लानत का सामना करना पड़ेगा।
  हालांकि, यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" का प्रयोग किया गया है, जो यह दर्शाता है कि फिरआउन और उसकी क़ौम के कर्मों के कारण उन्हें निरंतर सजा और लानत मिलेगी। यह धार्मिक दृष्टिकोण है, लेकिन इसका कोई भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 99:

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) ये चन्द बस्तियों के हालात हैं जो हम तुम से बयान करते हैं उनमें से बाज़ तो (उस वक़्त तक) क़ायम हैं और बाज़ का तहस नहस हो गया।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  अल्लाह ने अपनी बस्तियों की हालत को बयान किया है, उनमें से कुछ बस्तियाँ आज भी हैं, जबकि कुछ का विनाश हो चुका है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि कुछ बस्तियों के विनाश के बाद भी कुछ बस्तियाँ अस्तित्व में हैं। यह तर्क उनके कर्मों और आस्थाओं के परिणामस्वरूप बस्तियों के अस्तित्व और विनाश को जोड़ता है।
  हालांकि, यह सिद्धांत धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है, और इसका कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" के सिद्धांत का प्रयोग किया गया है, जहां बस्तियों के अस्तित्व और विनाश को उनके कर्मों से जोड़ा गया है। यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 100:

आयत का अनुवाद: "और हम किसी बस्ती को तबाह नहीं करते जब तक उसका (ज़ुल्म से) पूरा हद तक न पहुँच जाए और हमें यह ख़बर न पहुँच जाए कि वह लोग सुधार की ओर आ रहे हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  अल्लाह किसी बस्ती को तबाह नहीं करता जब तक कि वह बस्ती अपनी सीमा पार नहीं कर लेती और सुधार की संभावना न हो।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि अल्लाह किसी बस्ती का विनाश केवल तब करता है जब वह बस्ती सुधार की दिशा में नहीं बढ़ती और अपने बुरे कर्मों से नहीं रुकती। यह तर्क यह दर्शाता है कि अल्लाह का अज़ाब निश्चित परिस्थितियों पर निर्भर है।
  हालांकि, यह तर्क भी धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" का प्रयोग किया गया है, जहां अल्लाह का अज़ाब तब आता है जब कोई बस्ती सुधार की ओर नहीं बढ़ती और अत्याचार करती है। यह धार्मिक दृष्टिकोण है, लेकिन इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

आयत 101:

आयत का अनुवाद: "और हमने किसी तरह उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि उन लोगों ने आप अपने ऊपर (नाफरमानी करके) ज़ुल्म किया फिर जब तुम्हारे परवरदिगार का (अज़ाब का) हुक्म आ पहुँचा तो न उसके वह माबूद ही काम आए जिन्हें ख़ुदा को छोड़कर पुकारा करते थे और न उन माबूदों ने हलाक करने के सिवा कुछ फायदा ही पहुँचाया बल्कि उन्हीं की परसतिश की बदौलत अज़ाब आया।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Means of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि अल्लाह ने किसी बस्ती पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उनका खुद का पाप और नाफरमानी उनका विनाश का कारण बनी। जब अल्लाह का अज़ाब आया, तो वे देवता, जिन्हें वे अल्लाह से अलग पूजते थे, उनकी मदद नहीं कर पाए और उल्टे उनका ही पूजा करने के कारण अज़ाब आया।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Pramana" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि अज़ाब का कारण उन लोगों का खुद का गलत मार्गदर्शन और उनके झूठे देवताओं की पूजा थी। यह धार्मिक दृष्टिकोण से यह तर्क प्रस्तुत करता है कि जब कोई अल्लाह के अलावा किसी अन्य चीज़ की पूजा करता है, तो उसके परिणामस्वरूप बुरा अंजाम आता है।
  यह तर्क आस्थाओं पर आधारित है, लेकिन इसका भौतिक, वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है, क्योंकि धार्मिक विश्वासों के आधार पर परिणामों का निर्धारण किया गया है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Pramana" का उपयोग किया गया है, जहां देवताओं की पूजा करने के बजाय अल्लाह की पूजा न करने के कारण अज़ाब का सामना करना पड़ा। यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 102:

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) बस्तियों के लोगों की सरकशी से जब तुम्हारा परवरदिगार अज़ाब में पकड़ता है तो उसकी पकड़ ऐसी ही होती है बेशक पकड़ तो दर्दनाक (और सख़्त) होती है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा जा रहा है कि जब किसी बस्ती के लोग सरकशी करते हैं और अल्लाह का अज़ाब उन्हें पकड़ता है, तो यह अज़ाब एक कठोर और दर्दनाक सजा होती है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि बुराई और नाफरमानी का परिणाम हमेशा सख्त अज़ाब होता है, जो दर्दनाक होता है। यह एक निरंतर और अपरिवर्तनीय संबंध दर्शाता है।
  हालांकि, यह सिद्धांत धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है, क्योंकि यह केवल आस्था के आधार पर है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" के सिद्धांत का प्रयोग किया गया है, जहां नाफरमानी का परिणाम हमेशा कठोर अज़ाब होता है। यह धार्मिक आस्था का विषय है और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

आयत 103:

आयत का अनुवाद: "इसमें तो शक नहीं कि उस शख़्स के वास्ते जो अज़ाब आख़िरत से डरता है (हमारी कुदरत की) एक निशानी है ये वह रोज़ होगा कि सारे (जहाँन) के लोग जमा किए जायंगे और यही वह दिन होगा कि (हमारी बारगाह में) सब हाज़िर किए जायंगे।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि अज़ाब से डरने वाले के लिए क़यामत के दिन एक बड़ी निशानी होगी, जब सारे लोग एकत्रित होंगे और अल्लाह के सामने हाजिर होंगे।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि क़यामत का दिन एक निष्क्रिय और निर्णायक दिन होगा, जो सभी को अपने कर्मों का हिसाब देने के लिए एकत्रित करेगा। यह तर्क क़यामत के दिन की सत्यता पर आधारित है।
  हालांकि, यह तर्क भौतिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं है और यह एक धार्मिक आस्था पर आधारित है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Hetu" का प्रयोग किया गया है, जिसमें क़यामत के दिन की घटना को एक संकेत के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 104:

आयत का अनुवाद: "और हम बस एक मुअय्युन मुद्दत तक इसमें देर कर रहे हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि अल्लाह ने अज़ाब को एक निश्चित समय तक टाला हुआ है।
- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि अज़ाब का आना एक निश्चित समय पर तय है और यह अवश्य आएगा। यह एक अपरिवर्तनीय और निरंतर संबंध को दर्शाता है। हालांकि, यह तर्क एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" का उपयोग किया गया है, जहां अज़ाब का समय तय है और यह एक निश्चित समय में ही होगा। यह धार्मिक आस्था का विषय है, लेकिन इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

आयत 105:

आयत का अनुवाद: "जिस दिन वह आ पहुँचेगा तो बग़ैर हुक्मे ख़ुदा कोई शख़्स बात भी तो नहीं कर सकेगा फिर कुछ लोग उनमे से बदबख़्त होगें और कुछ लोग नेक बख़्त।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन लोग बिना अल्लाह के हुक्म के कुछ नहीं बोल सकेंगे, और इस दिन कुछ लोग बुरे होंगे और कुछ अच्छे होंगे।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि क़यामत के दिन हर व्यक्ति का दर्जा उसके कर्मों के आधार पर तय होगा। जो बुरे होंगे, वे बदबख़्त होंगे, और जो अच्छे होंगे, वे नेक होंगे। यह एक अपरिवर्तनीय संबंध दर्शाता है।
 हालांकि, यह तर्क एक धार्मिक आस्था पर आधारित है और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Vyapti" के सिद्धांत का प्रयोग किया गया है, जहां क़यामत के दिन कर्मों के आधार पर लोग अपने परिणामों को प्राप्त करेंगे। यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

आयत 106:

आयत का अनुवाद: "तो जो लोग बदबख़्त हैं वह दोज़ख़ में होगें और उसी में उनकी हाए वाए और चीख़ पुकार होगी।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत बताती है कि जो लोग बदबख़्त हैं, वे हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे और उसमें उनकी हाय-हाय और चीख़-पुकार होगी।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि बुरे कर्मों का परिणाम हमेशा दोज़ख़

है, और इस कड़ी का कोई अपवाद नहीं होगा। यह सिद्धांत निरंतरता और अपरिवर्तनीयता को दर्शाता है।
हालांकि, यह एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" का प्रयोग किया गया है, जहां बुरे कर्मों के परिणामस्वरूप दोज़ख़ का परिणाम सुनिश्चित किया गया है। यह धार्मिक विश्वास है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 107:

आयत का अनुवाद: "वह लोग जब तक आसमान और ज़मीन में है हमेशा उसी मे रहेगें मगर जब तुम्हारा परवरदिगार (नजात देना) चाहे बेशक तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है कर ही डालता है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि बदबख़्त लोग दोज़ख़ में रहेंगे जब तक अल्लाह चाहें, और उनके लिए कोई राहत नहीं होगी जब तक अल्लाह का निर्णय न हो।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि अल्लाह का इरादा ही निर्णायक होता है, और यही उनके कर्मों का अंतिम परिणाम तय करता है। यह तर्क यह दर्शाता है कि हर चीज़ अल्लाह के इरादे के अनुसार होती है।
  हालांकि, यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसका भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Hetu" का प्रयोग किया गया है, जहां सभी घटनाएँ अल्लाह के इरादे पर निर्भर होती हैं। यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है, लेकिन इसका भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 108:

आयत का अनुवाद: "और जो लोग नेक बख़्त हैं वह तो बेहेशत में होगें (और) जब तक आसमान व ज़मीन (बाक़ी) है वह हमेशा उसी में रहेगें मगर जब तेरा परवरदिगार चाहे (सज़ा देकर आख़िर में जन्नत में ले जाए।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि नेक लोग हमेशा जन्नत में रहेंगे, जब तक आसमान और ज़मीन कायम हैं, और यदि अल्लाह चाहें तो उन्हें जन्नत में स्थान देंगे।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि नेक कर्मों का परिणाम हमेशा जन्नत होता है, और यह निष्क्रिय और अपरिवर्तनीय रूप से होता है।
  हालांकि, यह धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" का प्रयोग किया गया है, जहां नेक कर्मों का परिणाम हमेशा जन्नत के रूप में निर्धारित किया गया है। यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 109:

आयत का अनुवाद: "ये वह बख़्शिश है जो कभी मनक़तआ (खत्म) न होगी तो ये लोग (ख़ुदा के अलावा) जिसकी परसतिश करते हैं तुम उससे शक में न पड़ना ये लोग तो बस वैसी इबादत करते हैं जैसी उनसे पहले उनके बाप दादा करते थे और हम ज़रुर (क़यामत के दिन) उनको (अज़ाब का) पूरा पूरा हिस्सा बग़ैर कम किए देगें।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत कहती है कि जो लोग अल्लाह के अलावा अन्य देवताओं की पूजा करते हैं, उन्हें क़यामत के दिन पूरी सजा मिलेगी, और यह उनकी पूर्वजों की परंपरा का पालन है।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि ऐसे लोगों का विश्वास गलत है और उनके द्वारा की जाने वाली इबादत उनके पूर्वजों की परंपरा का अनुसरण करती है।
 हालांकि, यह तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Prameya" का प्रयोग किया गया है, जहां शिर्क (अल्लाह के अलावा अन्य देवताओं की पूजा) को गलत ठहराया गया है, और क़यामत के दिन उनका पूरा हिस्सा मिलने की बात कही गई है। यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

आयत 110:

आयत का अनुवाद: "और हमने मूसा को किताब तौरैत अता की तो उसमें (भी) झगड़े डाले गए और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हुक्म कोइ पहले ही न हो चुका होता तो उनके दरमियान (कब का) फैसला यक़ीनन हो गया होता और ये लोग (कुफ़्फ़ारे मक्का) भी इस (कुरान) की तरफ से बहुत गहरे शक में पड़े हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत यह बताती है कि मूसा को जो किताब दी गई थी, उसमें भी लोग आपस में झगड़े करते थे, और अगर अल्लाह की ओर से पहले आदेश न होता, तो यह झगड़ा हल हो गया होता। यह आयत यह भी कहती है कि कुरान को लेकर मक्का के लोग गहरे शक में हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि पहले की किताबों (तौरैत) में भी

विवाद थे, और कुरान पर भी लोगों के बीच संदेह है।
यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, लेकिन इसका भौतिक प्रमाण नहीं है, क्योंकि यह मान्यता एक धार्मिक संदर्भ में है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Prameya" का उपयोग किया गया है, जो यह दर्शाता है कि धार्मिक किताबों में विवाद होते हैं, और मक्का के लोग कुरान को लेकर संदेह करते हैं। यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

आयत 111:

आयत का अनुवाद: "और इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार उनकी कारस्तानियों का बदला भरपूर देगा (क्यूंकि) जो उनकी करतूतें हैं उससे वह खूब वाक़िफ़ है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह बताती है कि अल्लाह उन लोगों की बुराई का बदला पूरी तरह से लेगा, और वह उनके कर्मों से पूरी तरह अवगत है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि हर बुराई का अंत में हिसाब होगा, और अल्लाह इसके बारे में पूरी जानकारी रखता है। यह तर्क निरंतरता और अपरिवर्तनीयता का समर्थन करता है।
  हालांकि, यह धार्मिक विश्वास है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" का प्रयोग किया गया है, जिसमें कहा गया है कि बुराई का बदला लिया जाएगा और अल्लाह इसके बारे में पूरी तरह से जानकारी रखता है। यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 112:

आयत का अनुवाद: "तो (ऐ रसूल) जैसा तुम्हें हुक्म दिया है तुम और वह लोग भी जिन्होंने तुम्हारे साथ (कुफ्र से) तौबा की है ठीक साबित क़दम रहो और सरकशी न करो (क्योंकि) तुम लोग जो कुछ भी करते हो वह यक़ीनन देख रहा है।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत यह निर्देश देती है कि रसूल और उसके साथ तौबा करने वाले लोग सही रास्ते पर चलें और सरकशी न करें, क्योंकि अल्लाह उनके हर कार्य को देख रहा है।

- **हेतु (Reasoning):**
 "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि अल्लाह हर कार्य को देखता है और इसका ध्यान रखना चाहिए। यह उपदेश यह बताता है कि सही कर्मों की ओर बढ़ना ही उचित है। हालांकि, यह तर्क एक धार्मिक दृष्टिकोण है, जो किसी भौतिक प्रमाण पर आधारित नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
 इस आयत में "Prameya" का प्रयोग किया गया है, जहां यह निर्देश दिया गया है कि लोग सही रास्ते पर चलें और यह ध्यान रखें कि अल्लाह उनके कर्मों को देख रहा है। यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 113:

आयत का अनुवाद: "और (मुसलमानों) जिन लोगों ने (हमारी नाफरमानी करके) अपने ऊपर ज़ुल्म किया है उनकी तरफ माएल (झुकना) न होना और वरना तुम तक भी (दोज़ख़) की आग आ लपटेगी और ख़ुदा के सिवा और लोग तुम्हारे सरपरस्त भी नहीं हैं फिर तुम्हारी मदद कोई भी नहीं करेगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि मुसलमानों को उन लोगों की तरफ माइल नहीं होना चाहिए जिन्होंने अल्लाह के आदेशों की नाफ़रमानी की है, क्योंकि ऐसा करने से दोज़ख़ का अज़ाब आ सकता है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि यदि लोग नाफ़रमानी करने वालों की तरफ माइल होंगे तो उन्हें भी दोज़ख़ का अज़ाब हो सकता है, क्योंकि उनका यह कार्य गलत है। यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।
  हालांकि, इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Hetu" का प्रयोग किया गया है, जिसमें कहा गया है कि नाफ़रमानी करने वालों की तरफ माइल होने से दोज़ख़ का खतरा हो सकता है। यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 114:

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) दिन के दोनों किनारे और कुछ रात गए नमाज़ पढ़ा करो (क्योंकि) नेकियाँ यक़ीनन गुनाहों को दूर कर देती हैं और (हमारी) याद करने वालो के लिए ये (बातें) नसीहत व इबरत हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Proof)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह बताती है कि नमाज़ पढ़ने से नेकियाँ गुनाहों को दूर कर देती हैं, और यह अल्लाह की याद करने वालों के लिए नसीहत और इबरत है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Pramana" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि नेकियाँ गुनाहों को नष्ट करती हैं और यह बात धार्मिक अनुभव और विश्वास के आधार पर सही मानी जाती है।
  हालांकि, यह तर्क भौतिक प्रमाण से जुड़ा हुआ नहीं है, क्योंकि इसे विश्वास और आस्था के स्तर पर

माना जाता है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Pramana" का उपयोग किया गया है, जहां नमाज़ को गुनाहों को दूर करने का एक साधन बताया गया है। यह धार्मिक विश्वास है और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

आयत 115:

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) तुम सब्र करो क्योंकि ख़ुदा नेकी करने वालों का अज्र बरबाद नहीं करता।"

चुना गया न्याय तत्व: Prameya (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि अल्लाह नेकी करने वालों का पुरस्कार कभी व्यर्थ नहीं करता है।
- **हेतु (Reasoning):**
  "Prameya" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि जो लोग नेक काम करते हैं, उन्हें अल्लाह की ओर से पुरस्कार मिलेगा और यह कभी व्यर्थ नहीं जाएगा। यह एक धार्मिक और आस्थापरक दृष्टिकोण है।
  हालांकि, इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Prameya" का उपयोग किया गया है, जहां नेक कार्यों का पुरस्कार सुनिश्चित बताया गया है। यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 116:

आयत का अनुवाद: "फिर जो लोग तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनमें कुछ लोग ऐसे अक़्ल वाले क्यों न हुए जो (लोगों को) रुए ज़मीन पर फसाद फैलाने से रोका करते (ऐसे लोग थे तो) मगर बहुत थोड़े से और ये उन्हीं

लोगों से थे जिनको हमने अज़ाब से बचा लिया और जिन लोगों ने नाफ़रमानी की थी वह उन्हीं (लज़्ज़तों) के पीछे पड़े रहे और जो उन्हें दी गई थी और ये लोग मुजरिम थे ही।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह बताती है कि कुछ लोग पहले भी थे जो फसाद फैलाने से रोकते थे, लेकिन अधिकांश लोग नाफ़रमानी करते हुए उनके रास्ते से हट गए और इसी वजह से वे मुजरिम बने।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, इस आयत में यह कहा गया है कि यह उन लोगों का दोष है जिन्होंने अज़ाब से बचने के बावजूद नाफ़रमानी की। यह तर्क यह बताता है कि जब लोग अपने कर्तव्यों से विमुख होते हैं, तो उनका परिणाम नकारात्मक होता है।
  हालांकि, यह धार्मिक दृष्टिकोण है, और इसका भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Hetu" का उपयोग किया गया है, जिसमें यह कहा गया है कि पहले कुछ लोग थे जो फसाद से बचाते थे, लेकिन अधिकांश लोग नाफ़रमानी करते हुए मुजरिम बने। यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 117:

आयत का अनुवाद: "और तुम्हारा परवरदिगार ऐसा (बे इन्साफ) कभी न था कि बस्तियों को जबरदस्ती उजाड़ देता और वहाँ के लोग नेक चलन हों।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि अल्लाह बस्तियों को तबाह नहीं करता जब वहाँ के लोग नेक होते हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि नेक लोग तबाही से बचते हैं। यह तर्क निरंतरता का समर्थन करता है कि अल्लाह कभी नेक लोगों को सज़ा नहीं देता।
  हालांकि, यह एक धार्मिक और विश्वास आधारित विचार है, जो भौतिक प्रमाण से मेल नहीं खाता।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" का प्रयोग किया गया है, जिसमें कहा गया है कि नेक लोग तबाही से बचते हैं। यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 118:

आयत का अनुवाद: "और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो बेशक तमाम लोगों को एक ही (किस्म की) उम्मत बना देता (मगर) उसने न चाहा इसी (वजह से) लोग हमेशा आपस में फूट डाला करेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि अगर अल्लाह चाहता, तो सभी लोग एक ही उम्मत में होते, लेकिन उसने ऐसा नहीं चाहा, इसलिए लोग आपस में बंटे हुए हैं।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Hetu" के सिद्धांत के अनुसार, यह कहा जा रहा है कि लोगों की विभिन्नताओं का कारण अल्लाह की इच्छा है। यह तर्क यह बताता है कि विविधता को अल्लाह ने तय किया है।
  हालांकि, यह एक धार्मिक विचार है, जिसका भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Hetu" का प्रयोग किया गया है, जिसमें कहा गया है कि विविधता अल्लाह की इच्छा के कारण है। यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 119:

आयत का अनुवाद: "मगर जिस पर तुम्हारा परवरदिगार रहम फरमाए और इसलिए तो उसने उन लोगों को पैदा किया (और इसी वजह से तो) तुम्हारा परवरदिगार का हुक्म क़तई पूरा होकर रहा कि हम यक़ीनन जहन्नुम को तमाम जिन्नात और आदमियों से भर देगें।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि अल्लाह का निर्णय निश्चित है कि वह जहन्नुम को जिन्नात और आदमियों से भर देगा।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि जिन लोगों पर अल्लाह का रहम नहीं होगा, उन्हें जहन्नुम में डाला जाएगा। यह तर्क निरंतरता का समर्थन करता है कि जो लोग अल्लाह की मार्गदर्शन से दूर होते हैं, वे अंततः जहन्नुम में जाएंगे।
  हालांकि, यह धार्मिक और विश्वास आधारित विचार है, जिसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" का प्रयोग किया गया है, जिसमें कहा गया है कि जो लोग अल्लाह की रहमत से वंचित होंगे, वे जहन्नुम में जाएंगे। यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 120:

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) पैग़म्बरों के हालत में से हम उन तमाम क़िस्सों को तुम से बयान किए देते हैं जिनसे हम तुम्हारे दिल को मज़बूत कर देगें और उन्हीं क़िस्सों में तुम्हारे पास हक़ (कुरान) और मोमिनीन के लिए नसीहत और याद दहानी भी आ गई।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Proof)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि अल्लाह ने पैग़म्बरों के किस्सों के जरिए रसूल के दिल को मजबूत किया, और इन किस्सों में हक़ और नसीहत है।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Pramana" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि पैग़म्बरों के किस्से हक़ का प्रमाण और मोमिनीन के लिए नसीहत होते हैं।
  हालांकि, यह एक धार्मिक विचार है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Pramana" का प्रयोग किया गया है, जहां पैग़म्बरों के किस्से हक़ और नसीहत के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 121:

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कहो कि तुम बजाए ख़ुद अमल करो हम भी कुछ (अमल) करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग ईमान नहीं लाते, उनसे कहो कि तुम अपने कार्य करो, और हम भी अपने कार्य करेंगे।

- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि सभी लोग अपने कार्यों के परिणामों के बारे में स्वयं जिम्मेदार हैं, चाहे वे ईमान लाते हों या नहीं। यह तर्क यह बताता है कि सभी को अपने कर्मों के नतीजे के लिए इंतजार करना होगा।
  हालांकि, यह धार्मिक दृष्टिकोण है और इसका भौतिक आधार नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" का प्रयोग किया गया है, जिसमें कहा गया है कि सभी लोग अपने कर्मों के

अनुसार परिणामों का इंतजार करेंगे। यह एक धार्मिक विचार है और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 122:

आयत का अनुवाद: "(नतीजे का) तुम भी इंतजार करो हम (भी) मुन्तिज़िर हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि तुम (कुफ़्फ़ार) और हम (मुसलमान) दोनों नतीजे का इंतजार करेंगे।
- **हेतु (Reasoning):**
  "Vyapti" के सिद्धांत के अनुसार, यह आयत यह कहती है कि दोनों पक्ष अपने कर्मों के परिणामों का इंतजार करेंगे। यह निरंतरता का समर्थन करती है, जिसमें दोनों को उनके कर्मों का हिसाब मिलेगा।
  हालांकि, यह एक विश्वास आधारित दृष्टिकोण है और इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।
- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में "Vyapti" का प्रयोग किया गया है, जिसमें दोनों पक्षों को उनके कर्मों के परिणामों का इंतजार करने के लिए कहा गया है। यह धार्मिक दृष्टिकोण है, जो भौतिक प्रमाण से मेल नहीं खाता।

आयत 123:

आयत का अनुवाद: "और सारे आसमान व ज़मीन की पोशीदा बातों का इल्म ख़ास ख़ुदा ही को है और उसी की तरफ हर काम हिर फिर कर लौटता है तुम उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और जो कुछ तुम लोग करते हो उससे ख़ुदा बेख़बर नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Proof)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि आकाश और पृथ्वी की सभी छिपी हुई बातों का ज्ञान केवल अल्लाह को है, और वह हर कार्य का परिणाम जानता है।

- **हेतु (Reasoning):**
  ”Pramana” के सिद्धांत के अनुसार, यह दावा किया जा रहा है कि अल्लाह का ज्ञान सभी चीज़ों पर आधारित है, चाहे वह दृष्टिगोचर हो या अदृश्य। यह तर्क यह बताता है कि अल्लाह सब कुछ जानता है और उसकी दृष्टि से कुछ भी बाहर नहीं है।
  हालांकि, यह एक धार्मिक विचार है, और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

- **निष्कर्ष (Conclusion):**
  इस आयत में ”Pramana” का प्रयोग किया गया है, जिसमें कहा गया है कि अल्लाह का ज्ञान सभी बातों पर है, चाहे वह अदृश्य हो। यह धार्मिक दृष्टिकोण है, और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

इन आयतों में मुख्य रूप से ”Vyapti” और ”Pramana” के न्याय तत्वों का उपयोग किया गया है, जो धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। इनका तात्त्विक या भौतिक प्रमाण नहीं है, और ये विश्वास और विश्वास आधारित तर्क हैं।